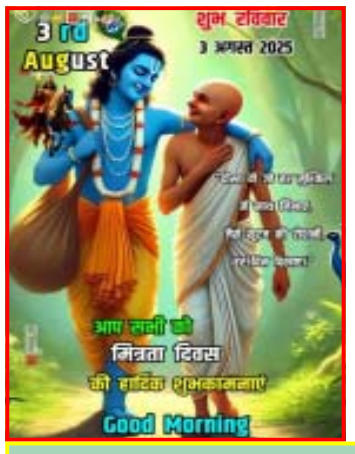

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 17 अंक : 24 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 07 अगस्त से 13 अगस्त, 2025 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

महाराष्ट्र में नगर निकाय चुनाव का रास्ता साफ, सुप्रीम कोर्ट ने 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण को दी मंजूरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक अहम फैसले में कहा कि महाराष्ट्र के सभी नगर निकाय चुनावों में 27 प्रतिशत ओबीसी आरक्षण लागू रहेगा। साथ ही, राज्य सरकार द्वारा की गई नई प्रभाग रचना (वार्ड बंटवारा) को भी वैध ठहराया गया है। कोर्ट के इस फैसले से मुंबई, ठाणे, पुणे, नागपुर समेत पूरे महाराष्ट्र में रुके हुए नगर निकाय चुनावों का रास्ता साफ हो गया है। पिछले कुछ समय से राज्य में नगर निकाय चुनाव नहीं हो पा रहे थे। इसका कारण था नई वार्ड रचना और ओबीसी आरक्षण को लेकर चल रही कानूनी प्रक्रिया। कुछ याचिकाकर्ताओं ने नई प्रभाग रचना को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। हालांकि, न्यायमूर्ति सूर्यकांत सहित खंडपीठ ने इन सभी याचिकाओं को खारिज करते हुए राज्य सरकार के फैसलों को उचित ठहराया है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि चुनाव अब नई प्रभाग रचना के आधार पर ही कराए जाएंगे और ओबीसी आरक्षण लागू रहेगा। कोर्ट ने राज्य सरकार को निर्देश दिया है कि वह चार हफ्तों के भीतर चुनाव अधिसूचना जारी करे और चार महीनों के भीतर चुनाव प्रक्रिया पूरी करे। यह फैसला बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के 227 वार्डों सहित पूरे राज्य की सभी महानगरपालिकाओं और स्थानीय निकायों पर लागू होगा। गौरतलब है कि वर्ष 1994 से 2022 तक ओबीसी आरक्षण स्थानीय निकायों में लागू था। सुप्रीम कोर्ट ने अब एक बार फिर उसी आधार को मान्यता दी है। इस फैसले को ओबीसी समुदाय के लिए बड़ी राजनीतिक राहत और प्रतिनिधित्व की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है।

ललीत टी राठौड़ पुरस्कृत किये गये

मुंबई –जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल द्वारा आयोजित आइ आइ जे एस भारत 2025 में मीडिया सेलिब्रेशन किया गया स जिसमें सीए पब्लिकेशन के डायरेक्टर ललीत टी राठौड़ को जीजेइपीसी की ओर से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में जीजेइपीसी के चेयरमैन किरीट भंसाली,शोधक परीख, निरव भंसाली तथा सभी प्रमुख अतिथियों को मोमेंट प्रशस्ति प्रतीकों को देकर सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित पत्रकारों को भी सम्मानित किया गया।

17,000 करोड़ के लोन फ्रॉड केस में अनिल अंबानी की बढ़ीं मुश्किलें, ईडी ने मांगी जांच की डिटेल्स

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अनिल अंबानी की कंपनियों से जुड़े 17,000 करोड़ रुपये के कथित लोन फ्रॉड मामले में बड़ा कदम उठाया है। सूत्रों के मुताबिक ईडी ने 12–13 बैंकों को पत्र लिखकर अनिल अंबानी समूह की कंपनियों को दिए गए लोन पर की गई उचित जांच की डिटेल्स मांगी है। एसबीआई, एक्सिस बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, यूको बैंक और पंजाब एंड सिंध बैंक सहित सार्वजनिक क्षेत्र के दोनों बैंकों और निजी बैंकों से संपर्क किया गया है। ईडी ने लोन चूक पर अपनाई गई प्रक्रिया, चूक की समय–सीमा और वसूली की कार्रवाई की डिटेल्स मांगी है। अधिकारी का कहना है कि अगर जवाबों से संतुष्ट नहीं हुए तो बैंकरों को तलब किया जा सकता है और उनसे पूछताछ की जा सकती है। अनिल अंबानी समूह की कंपनियों को दिए गए अधिकांश लोन एनपीए में बदल गए। कुल लोन धोखाधड़ी 17,000 करोड़ रुपये की है। रिलायंस हाउसिंग फाइनेंस और रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस पर कुल मिलाकर 12,534 करोड़ रुपये बकाया हैं। जबकि शेष 4,000 करोड़ रुपये रिलायंस कम्युनिकेशंस पर बकाया है।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने रिलायंस समूह के चेयरमैन अनिल अंबानी के समूह की कंपनियों के खिलाफ दर्ज करोड़ों रुपये के कथित बैंक ऋण धोखाधड़ी से जुड़े धनशोधन मामले में उन्हें पांच अगस्त को पूछताछ के लिए बुलाया है। सूत्रों ने बताया कि संघीय जांच एजेंसी ने अनिल अंबानी को विदेश यात्रा करने से रोकने के लिए उनके खिलाफ लुकआउट सर्कुलर (एलओसी) भी जारी किया है। उन्होंने कहा कि मामला दिल्ली में दर्ज होने की वजह से अंबानी (66) को दिल्ली स्थित ईडी मुख्यालय बुलाया गया है। जानकारी के अनुसार एजेंसी अंबानी के पेश होने पर धनशोधन निवारण अधिनियम के तहत उनका बयान दर्ज करेगी। उनके समूह की कंपनियों के कुछ अधिकारियों को भी अगले कुछ दिन में पेश होने के लिए कहा गया है।

अमेरिका ने फिर दी भारत को धमकी..........आखिर, कब तक भारत के अपमान पर चुप रहेगा डरपोक प्रधानमंत्री

जब अपना ही सिक्का खोटा हो तो दूसरे को क्या दोष देना. .....वर्ना अमेरिका में कोई पैदा नहीं हुआ था जो भारत को इस तरह से रोज धमकियाता।

ट्रंपवा आजकल हर रोज सुबह उठने के बाद पहला काम यही कर रहा है कि भारत को हड़का रहा है। मगर हमारा प्रधानमंत्री कान में रूई डालकर पता नहीं किस बिल में घुसकर सो रहा है।

...इतना डरपोक, रीढ़विहीन और बेशरम प्रधानमंत्री को भारत झेल कैसे रहा है भाई!!

जनता को चाहिए कि इसके पिछवाड़े पर चार लात मारकर इसे कुर्सी से उतार दे। इस बेवकूफ और चूतिए के चक्कर में रोज भारत की बदनामी हो रही है। आज मोदी की जगह कोई दूसरा आदमी भारत का प्रधानमंत्री होता तो अब तक अमेरिका का सारा पागलपन उतर चुका होता। इंदिरा गांधी होती तो अमेरिका को पागलपन का ये बुखार कभी चढ़ता ही न।

अभी दो दिन पहले ट्रंप ने भारत पर 25 फीसदी टैरिफ और रूस से तेल खरीदने के एवज में हमारे ऊपर जुर्माना लगाया था। अब आज ये फिर कह रहा है कि अभी भारत पर और टैरिफ लगाएंगे।

पता है उसने ऐसा क्यों कहा. ......क्योंकि ट्रंप को पता है कि भारत का प्रधानमंत्री मोदी डरपोक, लिजलिजा और चमनचूतिया है। भारत पर कितना भी मनमानी थोंप दो, मोदी कुछ नहीं बोलेगा। उसके भीतर जवाब देने की कुवत ही नहीं है।

अभी एक दिन पहले ट्रंप ने 33 वीं बार दुनिया के सामने कहा कि हमने भारत और पाकिस्तान को धमकाकर युद्ध रूकवाया है। मगर हमारा वाला इसका खंडन करने की जगह बिल में सो रहा है।

एक मूर्ख, नफरती और डरपोक प्रधानमंत्री किसी देश का कितना भयंकर नुकसान कर सकता है, इसका भारत से बेहतर उदाहरण पूरी दुनिया में नहीं मिल सकता।

मोदी सत्ता में आते ही विदेश नीति को देश के लेवल पर डील करने की जगह पर्सनल लेवल पर डील करना शुरू कर दिया। भारत के अरबों रूपये फूंक कर अमेरिका जाकर ट्रंप का प्रचार करने लगा। उसके भक्त देश में कहने लगे कि पापा का डंका बज रहा है, उन्हें क्या पता था कि डंका नहीं अभी बैंड बजेगा।

फिर क्या था, अमेरिका ने मोदी की असली औकात समझ ली। भारत की बजाय वो आतंकी पाकिस्तान को प्रमोट करने लगा। भारत को लोगों को धकियाकर, पीटकर भेड़–बकरियों की तरह बांधकर भारत में पटका जाने लगा। अमेरिका में भारत के लोगों की एंट्री कठिन कर दी गई। अमेरिका जिस देश से चाहता था, मोदी उस देश से व्यापार करने लगा, इसके बावजूद ट्रंप लगातार भारत का नुकसान करने लगा।

पहले भारत से संघर्ष के बीच पाकिस्तान को अरबों डालर की मदद दिलवा दी, न्छ में पाकिस्तान को अच्छी पोजीशन दिलवा दी। पाकिस्तान के साथ क्रिप्टो और तेल का एग्रीमेंट कर लिया। जबकि भारत पर टैरिफ थोंप दिया, अमेरिका जाने वाले भारतीयों पर मनमानी तरह के प्रतिबंध।

आज इस चमनचूतिए प्रधानमंत्री और उसकी चूतिया सरकार के कारण दुनिया में भारत की औकात पाकिस्तान से भी बदतर हो गई। कभी अमेरिका, कभी चीन, कभी पाकिस्तान, यहां तक कि बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, मालदीव और उजबेकिस्तान जैसे देश भी भारत को धमका देता है।

आप खुद सोचिए कि देश को विश्वगुरू का सपना दिखाकर इस आदमी ने देश को कहां पहुंचा दिया.....!!

बेटियों को लेकर संतों के बयान पर समाज में बहुत जगह आक्रोश है, होना भी चाहिये

परन्तु प्रश्न क्या था, किन परिस्थितियों में किया गया, उसका उत्तर अलग अलग होगा

वर्तमान में बेटे और बेटियों की आयु तीस वर्ष से चौंतीस पैंतीस तक हो रही है, इसका मतलब सबकी नहीं अपितु कुछ की जिसके कारण उनके माता–पिता चिंतित हैं। शादी नहीं हो रही या अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण कर नहीं पा रहे, कोई लिव इन में रह रहा है तो कोई आजादी का बिगुल बजा रहा है किसी को पद पैसे की चाह है, कारण बहुत से हो सकते हैं। विचार कीजिये क्या यह भारतीय परिवार सिस्टम को तोड़ने की सुनियोजित साजिश तो नही है?

हमारे मन मस्तिष्क में फ़िल्मों टीवी सीरियलों सीरीज़ के द्वारा उन्मुक्त जीवन का ज़हर बोया जा रहा है। जिसमें वाम पंथ का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

समाज में संतों को मार्गदर्शक कहा जाता है। उनकी सलाह सुझाव पर अमल करना या नहीं करना आपके विवेक पर निर्भर करता है। सरकार ने शादी की आयु अट्ठारह व इक्कीस वर्ष निर्धारित की।

बच्चे पढ़ें आगे बढ़ें तो क्या इसका अर्थ निरंकुश होना है अथवा समझदार बनना।

आज परिवारों में बच्चों की शादी में माता–पिता का दायित्व शून्य हो चुका है। देर में शादी होने लगी, समाज परिवार का महत्व निजी सुविधाओं और जीवन पर खत्म होने लगा। परिवारों में तनाव घुटन कुंठा बढ़ रहा है । अलगाव व तलाक़ के मामलों में अप्रत्याशित वृद्धि, कचहरियों में तलाक़ वालों की भीड़ वकीलों की लूट, चरित्र हनन, परिवार वालों को जेल, तलाक़ में समझौते के नाम पर मोटी मोटी डिमांड, आत्म हत्याएं,

विचार करिये यह सब क्या हो रहा है, हम कहाँ जा रहे हैं?

क्या यह भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य करण नहीं हो रहा है जहाँ उन्मुक्त उन्मादी जीवन, मूल्यों के प्रति नकारात्मकता, सैक्स को प्रमुखता व सुलभता, बच्चों व समाज के प्रति दायित्व से मुक्ति, सम्बंधों के निर्वहन के लिये वर्ष में एक दिन जैसे माता दिवस पिता दिवस परिवार दिवस? एक व्यक्ति पता नहीं कितनी पत्नियाँ और सबके अलग–अलग बच्चे, एक महिला कितने पति किससे बच्चा पिता कौन, परिणाम अनाथ आश्रम या लावारिस की श्रेणी।

पश्चिम जगत में यह सब आम था जो अब हमारे यहाँ भी होने लगा। अगर संतों ने समस्याओं को ध्यान में रखकर कुछ सुझाव दिये तो लिबरांडू गैंग प्रहार करने लगे। जो विरोध में खड़े हैं क्या उनको कोई नुक़सान है संतों के बयान से? जी हाँ उनकी दुकान बंद हो जायेगी जिसके लिए विदेशी फंडिंग होती है।

गौर कीजिये कभी दौर चला था कन्या भ्रूण हत्या का। कभी बेटियों को आजादी का। आज बेटियों को विज्ञापन बना दिया गया है। बीड़ी सिगरेट शराब कंडोम कार मकान टीवी फ्रिज, यानि कोई भी वस्तु बिना महिला के विज्ञापन में नहीं दिखेगी।

अब सोशल मीडिया पर पढ़ी लिखी लड़कियाँ महिलायें रील बना रही हैं नग्नता का फूहड़ प्रदर्शन चल रहा है। यह सब निर्धारित एजेंडे के तहत ब्रेन वाश किया जाता है।

शिक्षित होकर आगे बढ़ने का संकल्प और संस्कार संस्कृति का समन्वय दक्षिण भारतीय महिलाओं में देखने को मिलता है। दुनिया के शीर्ष पदों पर पुलिस वैज्ञानिक अंतरिक्ष डॉक्टर नर्स कुशल राजनेता बड़ी बड़ी कम्पनियों में शीर्ष पदों पर दक्षिण भारतीयों को प्रमुखता से देखा जा सकता है। उनका अपनी परम्पराओं से निर्वहन माता पिता समाज के प्रति दायित्व उन्हें अग्रणी बनाता है।

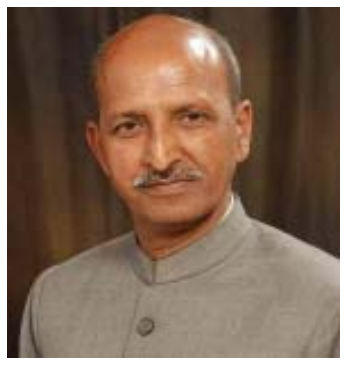

—डॉ0 कीर्ति वर्द्धन

साध्वी प्रज्ञा लसह और कर्नल पुरोहित को आज कोर्ट ने बाइज्जत बरी किया

"कुत्ती" , "कमीनी" , "वेश्या" , "कुलटा " बोल इस भगवा में किसकी रखैल है तू ?"

"अब तक कितनों के बिस्तर पर गई है?"

"किसके इशारे पर सब कर रही है ?"

"जिंदगी प्यारी है तो जो मैं कहता हूँ कबुल कर ले बाकी जिंदगी आराम से कटेगी"

यह शब्द सुनकर आपकी त्योरियां जरुर चढ़ गई होगी

मेरी भी चढ़ गई थी।

ऐसे घृणित शब्दों से किसी और को नहीं

बल्कि भगवा वस्त्र धारिणी निष्कलंक साध्वी प्रज्ञा सिंह को कलंकित "कांग्रेस"घ के इशारे पर मुम्बई ।जै चीफ हेमंत करकरे के सामने मुम्बई पुलिस व ।जै ने कहलवाया था.

जिस हेमंत करकरे को आज शहीद मान कर सम्मान दिया जाता है एक नम्बर का नीच आदमी था. उस निर्दोष हिंदू साध्वी का श्राप लगा और आज हेमंत करकरे के परिवार में कोई दीपक जलाने वाला भी जीवित नहीं बचा है ।

मैं साध्वी प्रज्ञा जी का एक साक्षात्कार देख रहा था।

ऐसे घृणित शब्दों को इशारे में बताया।

बताते हुए उनके नेत्र सजल हो गये.

साक्षात्कार देखते हुए क्रोधाग्नि से धधक रहे मेरे आँखो से भी अश्रु की धारा फूट पड़ी।

"साध्वी प्रज्ञा" ने मर्माहत शब्दों में वृत्तान्त सुनाया कि

मेरे शरीर का कोईघ ऐसा अंग नही जिसे चोटिल ना किया गया हो।

जब पत्रकार ने पुछा कि

मारने के कारण ही आपके रीढ़ की हड्डी टूट गईघ थी ??

साध्वी प्रज्ञा ने कहा,

"नहीं, मारने से नहीं,

एक जन हमारा हाथ पकड़ते थे एक जन पांव और झूलाकर दीवार की तरफ फेंक देते थे,

ऐसा प्रायः रोजाना होता था दीवार से सर टकराकर सुन्न हो जाता था।

कमर में भयानक दर्द होता था। ऐसा करते करते एक दिन रीढ़ की हड्डी टूट गई तब अस्पताल में भर्ती कराया गया।"

साध्वी प्रज्ञा ने बताया,

"एक दिन तो ऐसा हुआ कि

मारते मारते एक पुलिस वाला थक गया तो

दूसरा मारने लगा।

उस दौरान मेरे फेफड़े की झिल्ली फट गईघ फिर भी विधर्मी निर्दयता से मारता रहा.".

साध्वी प्रज्ञा ने बताया,

"रीढ़ की हड्डी टूटने के बाद मैं बेहोश हो गईघ थी।

जब होश आया तो देखा कि मेरे शरीर से सारा भगवा वस्त्र उतार लिया गया गया था.

मुझे एक फ्राक पहनाया गया था।"

साध्वी दीदी ने बताया,

"मेरे साथ मेरे एक शिष्य को भी गिरफ्तार किया गया था ।

उसे मेरे सामने लाकर उसे चौड़ा वाला बेल्ट दिया और कहा मार!! अपने गुरु को इस साली को!!"

."शिष्य, सकुचाने लगा तो मैं बोली मारो मुझे !!

शिष्य ने मजबुरी में मारा तो जरुर मुझे

लेकिन नरमी से।

तब एक पुलिस वाले ने शिष्य से बेल्ट छीन कर शिष्य को बुरी तरह पीटने लगा और बोला ऐसे मारा जाता है.

"साध्वी प्रज्ञा ने बताया कि

एक दिन कुछ पुरुषघ कैदियों के साथ मुझे खड़ी करके अश्लील आडियो सुनाया जा रहा था.

मेरे शरीर पर इतनी मार पड़ी थी कि

मेरे लिए खड़ी रहना मुश्किल था. मैं बोली कि बैठ जाऊँ वो बोले साली शादी मे आई है क्या कि बैठ जायेगी!!

मेरी आँख बंद होने लगी मैं अचेत हो गई।

साध्वी प्रज्ञा ने बताया,

"मेरे दोनों हाथों को सामने फैलवाकर एक चौड़े बेल्ट से मारते थे,

मेरा दोनो हाथ सूज जाता था।

अँगुलियां भी काम नही करती थी, तब गुनगुना पानी लाया जाता था। मैं अपने हाथ उसमें डालती,

कुछ आराम होता तब अंगलुयिां हिलने डुलने लगती थी,

तो फिर से वही क्रिया मेरे पर मार पड़ती थी।

साध्वी प्रज्ञा जी ने बताया कि मुझे तोड़ने के लिए मेरे चरित्र पर लांछन लगाया।

क्योंकि लोग जानते हैं कि किसी औरत को तोड़ना है तो उसके चरित्र पर दाग लगाओ !

मेरे जेल जाने के बाद यह सदमा मेरे पिताजी बर्दास्त नहीं कर पाये और इस दुनियां से चल बसे. साध्वी जी राहत की सांस लेते हुए कहती हैं मेरे अन्दर रहते ही,

एक दुर्बुद्धि दुराचारी हेमंत करकरे को तो सजा मिल गईघ मिल गई अभी बहुत लोग बाकी है।

साध्वी ने बताया,

"नौ साल जेल में थी,

सिर्फ एक दिन एक महिला ने एक डंडा मारा था,

बाकी हर रोज पुरुष ही निर्दयता से हमें पीटते थे."

पत्रकार ने पूछा,

"आपको समझ में तो आ गया होगा कि क्यों आपको इतने बेरहमी से तड़पाया जा रहा था?"

साध्वी जी ने कहा,

"हां, भगवा के प्रति उनका द्वेश था।

फूटी आंख भी भगवा को नही देखना चाहते थे।

भगवा को बदनाम करने का कांग्रेस ने एक सुनियोजित षडयंत्र तैयार किया था."

साध्वी ने बताया कि

एक बार कांग्रेस का गुलाम, स्वामी अग्निवेष मुझसे मिलने जेल में आया और बोला,

"आप सब कबुल कर लो कि

हां! यह सब ै के कहने पर हुआ है।

इसमें यूपी के सांसद योगी आदित्य नाथ और संघ के इंद्रेश कुमार का नाम ले लो ।

सरकारी गवाह बन जाओ।

चिदम्बरम और दिग्विजय हमारे मित्र हैं।

मै आपको छुड़वा दुंगा"

साध्वी जी ने कहा,

"अगर आपकी उनसे घनिष्ठता है और सच में हमें छुड़ाना चाहते हो,

तो चिदम्बरम से जाकर बोलो की इमानदारी से जांच करवा ले, क्योंकि मैंने ऐसा कुछ किया ही नही है ।"

हिन्दुओं सबसे ख़ास बात ये कि साध्वी पर ये अत्याचार किसी इस्लामिक काल में नही हुआ है

इसके आगे आपको सोचना है कि काँग्रेसियों के मन मे हिन्दुओं के लिए कितना प्रेम है।

काँग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र आपने पढ लिया होगा।

अब आपको निर्णय करना है कि आपको कैसा भारत चाहिये ,

और यदि अंतरात्मा ,स्वधर्म गौरव और स्वाभिमान नाम की कोई चीज है हिंदुओं के जेहन में तो तुम हिंदुओं को कसम है अयोध्या में विराजमान तुम्हारे आराध्य राम की, शहीद रामभक्तों और शहीदों के खून से लाल हुयी सरयू नदी की, इस सपा+ कांग्रेस को जीवन में कभी भी वोट मत देना। हिन्दू आतंकवाद शब्द गढ़ने का कांग्रेस ने गंदा प्रयास किया लेकिन आज कोर्ट ने इनके झूठ की पोल खोल दी है।

सत्यमेव जयते,.

भगवान विष्णु के चार दिव्य स्वरूप!

सृष्टि के संचालक के रूप में: सनातन धर्म में भगवान विष्णु को सृष्टि के पालनहार के रूप में पूजा जाता है। वे त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में से एक हैं, और उनका कार्य है इस ब्रह्मांड की रक्षा करना, सृष्टि का संतुलन बनाए रखना तथा समय–समय पर अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना करना।

हालाँकि लोग अक्सर भगवान विष्णु को उनके दशावतार के माध्यम से जानते हैं दृ जैसे कि राम, कृष्ण, नृसिंह, वामन आदि दृ लेकिन इन अवतारों से इतर भगवान विष्णु के कुछ दिव्य स्वरूप भी हैं, जो सृष्टि के गहन रहस्यों से जुड़े हैं। ये स्वरूप स्वयं भगवान विष्णु के विभिन्न स्तरों पर व्याप्त रूप हैं, जिनके माध्यम से सृष्टि, स्थितिक्रम, और जीवों की आत्मिक यात्रा संचालित होती है।

इन स्वरूपों की विस्तृत चर्चा वेदों, उपनिषदों, विष्णु पुराण, ब्रह्म संहिता, भागवत महापुराण, और अन्य तात्विक ग्रंथों में की गई है।

1. महाविष्णु (Maha Vishnu)

स्थितिःघ्घ कारण जल (Causal Ocean)

कार्यः अनंत ब्रह्मांडों की सृष्टि करना

महाविष्णु को भगवान विष्णु का सर्वोच्च ब्रह्माण्डीय स्वरूप माना जाता है। वे "कारण सागर" या "कारण जल" में विराजमान रहते हैं। यह जल उस क्षेत्र का प्रतीक है जहाँ भौतिक प्रकृति की सारी संभावनाएँ निहित होती हैं दृ जिसे "प्रकृति" और "महातत्त्व" कहा जाता है।

महाविष्णु का यह स्वरूप हर उस ब्रह्मांड के जन्म के पहले होता है जो अभी तक अस्तित्व में नहीं आया है। वे योगनिद्रा में स्थित रहते हैं और जब वे साँस छोड़ते हैं, तो उनके शरीर के रोमकूपों से अनगिनत ब्रह्मांड उत्पन्न होते हैं। हर ब्रह्मांड एक "अंड" (बवेउपब महह) के रूप में प्रकट होता है।

ब्रह्म संहिता (5.48) में कहा गया है:

"यस्यैक–निश्वसित–कालमथावलंब्य
जीवन्ति लोमविलजा जगदण्ड–नाथाः
विष्णुर्महाऽन्श स इह यस्य कलाविशेषो
गोविन्दमादि–पुरुषं तमहं भजामिध्"

अर्थात, एक ही श्वास में अनगिनत ब्रह्मांडों के ब्रह्मा जीवित रहते हैं, जो भगवान महाविष्णु के केवल अंश मात्र हैं। महाविष्णु इन सभी ब्रह्मांडों के जन्मदाता हैं, पर वे स्वयं उनमें प्रवेश नहीं करते।

महाविष्णु पूर्णतया आत्म–संतुष्ट, परमशक्तिमान, और अद्वितीय हैं। उनका कार्य केवल सृष्टि की आरंभिक उत्पत्ति करना है। इसके बाद वे उन ब्रह्मांडों के भीतर गर्भोदकशायी विष्णु के रूप में प्रवेश करते हैं।

2. गर्भोदकशायी विष्णु

स्थितिः कारण जल (Causal Ocean)

कार्यः अनंत ब्रह्मांडों की सृष्टि करना

महाविष्णु को भगवान विष्णु का सर्वोच्च ब्रह्माण्डीय स्वरूप माना जाता है। वे "कारण सागर" या "कारण जल" में विराजमान रहते हैं। यह जल उस क्षेत्र का प्रतीक है जहाँ भौतिक प्रकृति की सारी संभावनाएँ निहित होती हैं: जिसे "प्रकृति" और "महातत्त्व" कहा जाता है।

महाविष्णु का यह स्वरूप हर उस ब्रह्मांड के जन्म के पहले होता है जो अभी तक अस्तित्व में नहीं आया है। वे योगनिद्रा में स्थित रहते हैं और जब वे साँस छोड़ते हैं, तो उनके शरीर के रोमकूपों से अनगिनत ब्रह्मांड उत्पन्न होते हैं। हर ब्रह्मांड एक "अंड" (cosmic egg) के रूप में प्रकट होता है।

ब्रह्म संहिता (5.48) में कहा गया है:

"यस्यैक–निश्वसित–कालमथावलंब्य
जीवन्ति लोमविलजा जगदण्ड–नाथाः
विष्णुर्महाऽन्श स इह यस्य कलाविशेषो
गोविन्दमादि–पुरुषं तमहं भजामिध्"

अर्थात, एक ही श्वास में अनगिनत ब्रह्मांडों के ब्रह्मा जीवित रहते हैं, जो भगवान महाविष्णु के केवल अंश मात्र हैं। महाविष्णु इन सभी ब्रह्मांडों के जन्मदाता हैं, पर वे स्वयं उनमें प्रवेश नहीं करते।

महाविष्णु पूर्णतया आत्म–संतुष्ट, परमशक्तिमान, और अद्वितीय हैं। उनका कार्य केवल सृष्टि की आरंभिक उत्पत्ति करना है। इसके बाद वे उन ब्रह्मांडों के भीतर गर्भोदकशायी विष्णु के रूप में प्रवेश करते हैं।

2. गर्भोदकशायी विष्णु (Garbhodakashayi Vishnu)

स्थितिः प्रत्येक ब्रह्मांड के गर्भोदक समुद्र में

कार्यः हर ब्रह्मांड के भीतर सृष्टि की शुरुआत करना

जब एक ब्रह्मांड की उत्पत्ति होती है, तब महाविष्णु स्वयं उसमें प्रवेश करते हैं और गर्भोदकशायी विष्णु का रूप धारण करते हैं। इस नाम का अर्थ है दृ वह विष्णु जो गर्भ के समान जल में स्थित हैं।

ब्रह्मांड की आंतरिक परिधि के नीचे एक जल–समूह होता है जिसे "गर्भोदक" कहते हैं। इस जल में गर्भोदकशायी विष्णु शेषनाग की शैय्या पर विश्राम करते हैं। उनकी नाभि से एक कमल प्रकट होता है, जिसमें चार मुखों वाले ब्रह्मा जी उत्पन्न होते हैं।

ब्रह्मा जी को सृष्टि का वास्तविक निर्माता माना जाता है दृ लेकिन वे भी भगवान विष्णु की शक्ति से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। ब्रह्मा को निर्देश गर्भोदकशायी विष्णु से ही प्राप्त होते हैं।

गर्भोदकशायी विष्णु ब्रह्मांड के सभी तत्वों को नियंत्रित करते हैं दृ पंचमहाभूत, काल, मन, बुद्धि, अहंकार, और सत्व–रजस–तमस गुण।

संक्षेप में:

ये ब्रह्मा जी के उत्पत्ति के स्त्रोत हैं

हर ब्रह्मांड में केवल एक ही गर्भोदकशायी विष्णु होते हैं

वे प्रत्येक ब्रह्मांड की स्थूल रचना के लिए आधार प्रदान करते हैं

3. क्षीरोदकशायी विष्णु (ज्ञ्रीपतवकंीलप टपीदन)

स्थितिः क्षीर सागर (ब्मंद वि डपसा)

कार्यः अवतारों के रूप में प्रकट होना, जीवों का अंतःकरण में निवास करना

क्षीरोदकशायी विष्णु भगवान विष्णु का तीसरा प्रमुख स्वरूप है। यह स्वरूप हर ब्रह्मांड के भीतर स्थित होता है और विशेष रूप से ध्रुव लोक के नीचे स्थित क्षीर सागर में शेषनाग पर विराजमान रहता है।

यह वही स्वरूप है जो समय–समय पर अवतार लेता है कृ जैसे कि मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, राम, कृष्ण आदि। जब–जब धरती पर अधर्म बढ़ता है, तब यही विष्णु अवतार धारण करते हैं।

भगवद गीता में भगवान कहते हैं:

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्।"

यह कथन क्षीरोदकशायी विष्णु का है, जो स्वयं को "भगवान" कहते हैं और जीवों के लिए कार्य करते हैं।

एक विशेष भूमिकाः घ्घ क्षीरोदकशायी विष्णु प्रत्येक जीव के हृदय में "परमात्मा" के रूप में भी निवास करते हैं, जिन्हें अंतर्यामी कहा जाता है।

उनका कार्य हैः

जीवों के कर्मों का लेखा–जोखा रखना

मन, बुद्धि और निर्णय को नियंत्रित करना

स्मृति, विस्मृति, और प्रेरणा देना

भगवद गीता (15.15) में कहा गयाः

"सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।"

अर्थात, मैं सबके हृदय में स्थित हूँ, और मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और भुला देना आता है।

4. अंतर्यामी विष्णु (Antaryami Vishnu)

स्थितिः प्रत्येक जीव के हृदय में

कार्यः आत्मा के साथ–साथ रहना, उसे दिशा देना, धर्मानुसार प्रेरित करना

अंतर्यामी विष्णु क्षीरोदकशायी विष्णु का ही एक सूक्ष्मतम रूप है। यह रूप विशेष रूप से अदृश्य और आत्मिक है। वे हर प्राणी के हृदय में एक साक्षी के रूप में विद्यमान रहते हैं।

अंतर्यामी का कार्यः

जीव की आत्मा को सही और गलत का बोध कराना

किसी कर्म को करने से पहले चेतावनी देना (आंतरिक आवाज़)

प्रत्येक क्रिया का लेखा–जोखा रखना

मृत्यु के पश्चात कर्मानुसार फल दिलवाना

इस रूप को परमात्मा या साक्षी चैतन्य भी कहते हैं। इन स्वरूपों की सही समझ से सनातन धर्म की गहराई और भगवान विष्णु के व्यापक स्वरूप को जाना जा सकता है। भगवान विष्णु की महिमा असीम है। वे अनादि, अनंत, और सर्वव्यापी हैं।

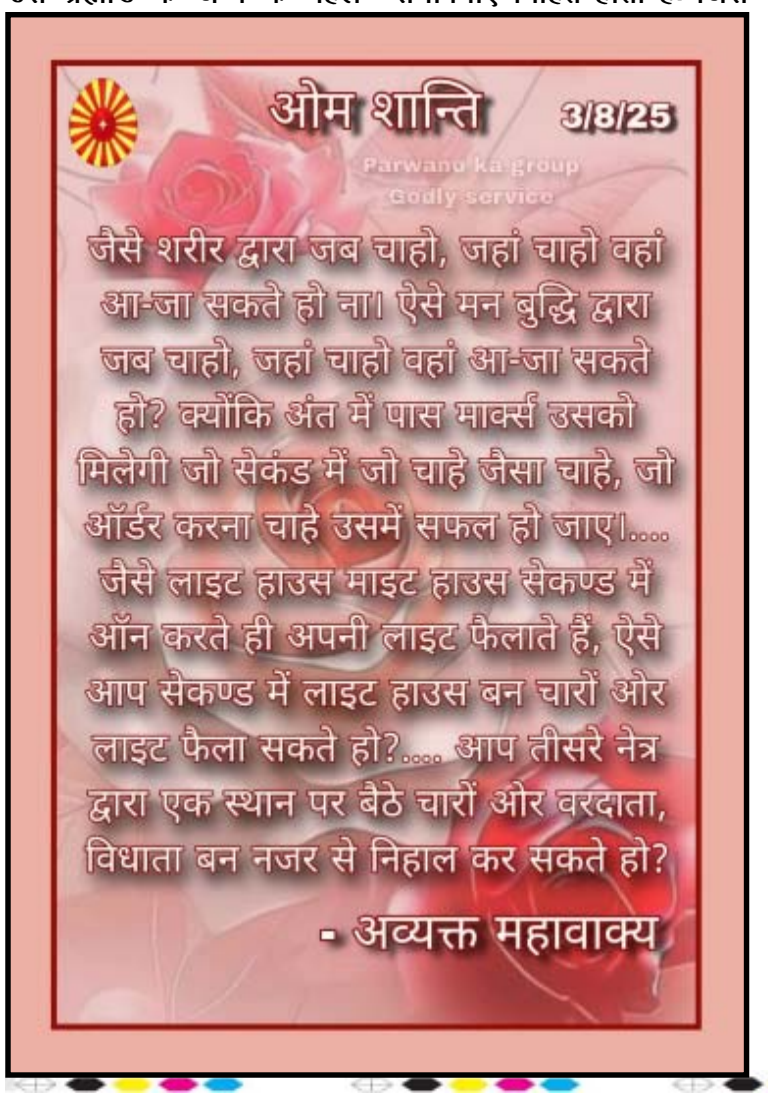

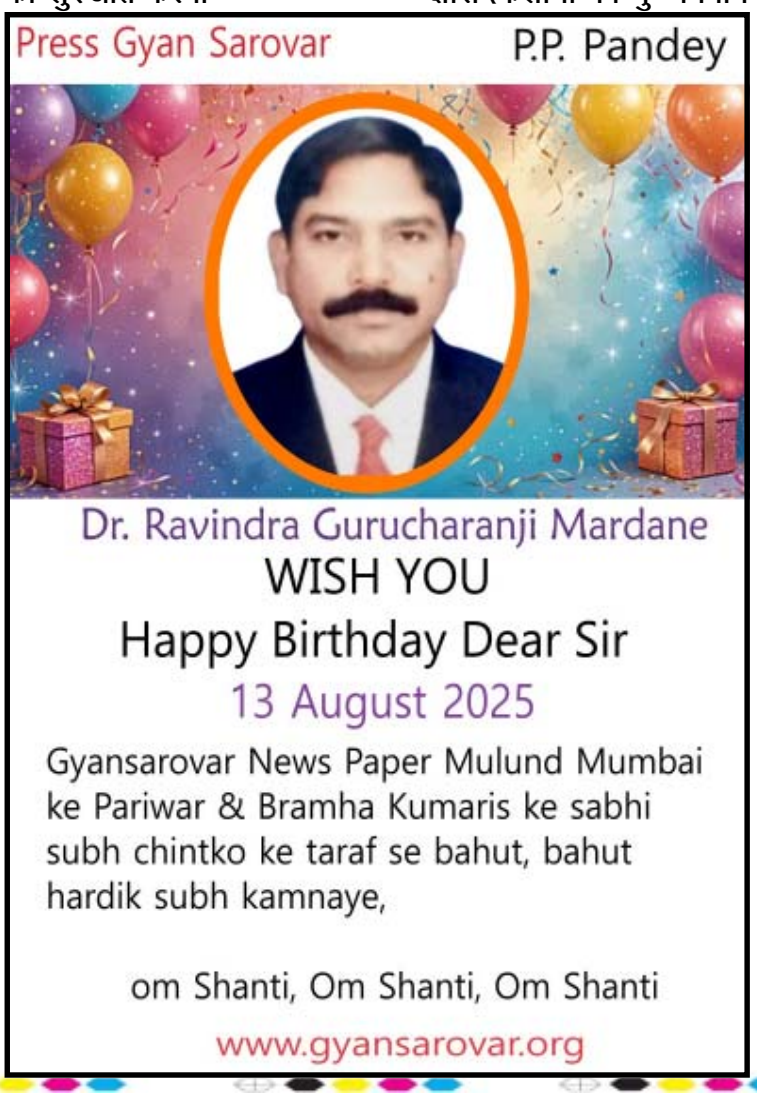

सम्पादकीय...

श्रद्धालुओं की भीड़ संभालने असफल क्यों

हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में मची भगदड़ में आठ श्रद्धालु मर गये तथा तीस से अधिक गंभीर घायल बताए जा रहे हैं। यह मंदिर पहाड़ी पर है, जहां पहुंचने के लिए आठ सौ सीढ़ियां हैं। मृतकों में चार उप्र के व एक–एक बिहार व उत्तराखंड के बताए जा रहे हैं। सावन माह में मंदिर में भारी भीड़ होती है। बताया जा रहा है कि मंदिर से करीब सौ मीटर पहले ही धक्का–मक्की के चलते करीब लटक रहे तार को सहारे के लिए लोगों ने पकड़ने की कोशिश की, जिससे करेंट लगने से अफरा–तफरी मच गई। हड़बड़ाहट में कुछ लोगों के गिरते ही भगदड़ मच गई। हरिद्वार की शिवालिक पहाड़ियों पर बना यह मंदिर बिल्व पर्वत पर पौड़ी से तीन किलोमीटर दूर है। महंत इसे मंदिर परिसर के भीतर नहीं हुई घटना कह कर हाथ झाड़ रहे हैं और सरकार ने मुआवजा घोषित कर रस्म अदा कर दी। इसी समय उप्र के बाराबंकी के औसानेर मंदिर में मची भगदड़ में दो की मौत हो गयी। मृतक के भाई का आरोप है, वहां तार सुलगते देखा गया था। पूजास्थलों में चढ़ावा और श्रद्धालुओं को बटोरने की होड़ किसी से छिपी नहीं है। स्थानीय प्रशासन या राज्य सरकारें श्रद्धालुओं की भीड़ को संभालने का जिम्मा सलीके से लेने में क्यों असफल हैं। महीना भर पहले ही पुरी में रथ–यात्रा के दौरान मची भगदड़ में तीन भक्तों की मौत हुई है। उससे पहले गोवा में भंदिर उत्सव में भगदड़ में छह मरे थे और इसी जनवरी में तिरुपीति में भी छह श्रद्धालु कुचल कर मारे गए थे। देश के विभिन्न धर्मस्थलों में प्रतिवर्ष होने वाले इन धार्मिक आयोजनों के बारे में सबको पहले से खबर होती है। दुनिया की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला मुल्क अपने बाशिंदों की जान को लेकर कितना संवेदनहीन हो रहा है। खासकर धर्म को अपना मुख्य एजेंडा बनाने वाली सत्ताधारी पार्टी का जिम्मा है कि वह भक्तों की सुरक्षा के प्रति लापरवाह रवैया बदले। किसी भी बड़े धार्मिक उत्सव/त्योहार को लेकर आयोजकों, मंदिर व्यवस्थापकों व स्थानीय प्रशासन व पुलिस को चेतावनी देनी होगी। समाज में धर्मपरायण व मान्यताओं के प्रति अगाध श्रृद्धा रखने वालों की संख्या का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है। विशेष अवसरों पर पूजा–अर्चना करने वालों की संख्या साल–दर–साल बढ़ती ही है। प्रशासन व पुलिस को भीड़ संभालने का प्रशिक्षण दिया जाए। भगदड़ जैसी घटनाएं घोर लापरवाही की श्रेणी में आती हैं। मुआवजों के भरोसे व्यवस्था नहीं सुधारी जा सकती। इस पर केंद्र को स्पष्ट निर्देश देने चाहिए।

मालेगॉंव व समझौता एक्सप्रेस बम विस्फोट में मारे गये निर्दोषों को न्याय कब मिलेगा

सन २००६ में मालेगॉंव की एक मस्जिद में बम ब्लास्ट हुआ। जिसमें कई निर्दोषों की नाहक ही जान चली गई। तत्कालीन सरकार ने कुछ अपराधियों को पकड़ा।उन पर केश चली।इसी तरह समझौता एक्सप्रेस में बम ब्लास्ट हुआ। उसमें भी कई निर्दोष मारे गये।उसके भी अपराधी पकड़े गये।उन पर भी केश चल रहा था।कि २००८ की तत्कालीन सरकार ने अचानक से सब उलट दिया। गिरफ्तार आरोपितों को रिहा कर, कर्नल श्रीकांत पुरोहित साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर आदि को गिरफ्तार करवा के मालेगॉंव व समझौता एक्सप्रेस ब्लास्ट का आरोपी बना दिया।और इन सब पर आतंकवादी कानून लगवाकर हिन्दू आतंकवाद की थ्योरी गढ़ दी।२६–११ मुम्बई हमले को भी उसी ऐंगल में ले जाने की कोशिश की।मगर जीवित आतंकी अजमल कसाब की गिरफ्तारी से तत्कालीन सरकार की सब चाल असफल हो गई और हिन्दू आतंकवादी कहलवाने से बच गये।तत्कालीन सरकार ने तो हिन्दुओं को आतंकवादी लगभग घोषित कर ही चुकी थी।प्रज्ञा ठाकुर व अन्य को आतंकवाद निरोधक कानून के अन्तर्गत कैदियों के साथ तत्कालीन प्रशासन ने बेहद दुर्दांत तरीके से दुर्व्यवहार किया।जितना टार्चर उपरोक्त लोगों का किया,यदि ऐसा ही टार्चर असली आतंकवादियों से की होती तो शायद भारत आतंक मुक्त हो जाता।जितनी जल्दबाजी तत्कालीन सरकार ने हिन्दू आतंकवाद गढ़ने, पुरोहित साध्वी प्रज्ञा सिंह आदि को आतंकी बनाने में की।यदि उतनी ही जल्दबाजी असली आतंकवादियों के साथ करती तो हजारों निर्दोष काल कवलित न होते।

बड़े लम्बे इंतजार के बाद अदालत का फैसला आया श्रीकांत पुरोहित साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर आदि तो बाइज्जत निर्दोष होकर बरी हो गये।अब सवाल ये उठता है कि जब ए लोग गुनहगार नहीं थे तो इन्हें शारीरिक मानसिक पीड़ा क्यों दी गई। इनका सामाजिक स्तर क्यों गिराया गया।या इनसे पहले जो इसी अपराध में पकड़े गये।उनका भी सामाजिक ह्रास हुआ।वे भी शारीरिक मानसिक रूप से प्रताड़ित किए गये।इन सब के दोषियों को सजा क्यों नहीं दी जा रही।इन उपरोक्त लोगों का जो आर्थिक नुकसान हुआ उसकी भरपाई कौन करेगा।इन लोगों को सही इंसाफ कब मिलेगा।और कौन देगा।इन लोगों को न्याय तब मिलेगा।जब तत्कालीन सरकार और सरकारी अफसरों पर दंडात्मक कार्रवाई होगी। तत्कालीन सरकार और सरकारी अफसरों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाय।और उन सभी लोगों को देशद्रोही घोषित कर उचित दंड दिया जाय। उपरोक्त लोगों का जो आर्थिक नुकसान हुआ है उसे तत्कालीन सरकार और सरकारी अफसरों से भरपाई करवाई जाय।तब उपरोक्त लोगों को सच में न्याय मिलेगा।ये न्याय नहीं मरहम है।जो थोड़ा राहत दे रहा।ये न्याय अधूरा है।बम विस्फोट में मारे गये लोगों को न्याय कब मिलेगा।उनके परिवार वाले तो अब भी इंतजार कर रहे हैं कि उन दुष्टों को कब दंड मिलेगा। जिन्होंने हमारे हंसते खेलते परिवार में ग्रहण लगा दिया।

इस उठापटक के चक्कर में मालेगांव समझौता एक्सप्रेस के अपराधी तो बड़ी आसानी से बच गये।उसके बारे में छानबीन कर कब कार्रवाई होगी।उन निर्दोषों को कब न्याय मिलेगा।या वे लोग न्याय ही नहीं पायेंगे।ए कैसी न्याय व्यवस्था है।कि अपराध करने वाला बगैर सजा के बरी हो गया।वे अपराधी कब पकड़े जायेंगे। जिन्होंने कई घरों के चिराग बुझा दिये।कइयों को विधवा,कइयों को पुत्रहीन कर दिया।ये अधूरा न्याय देश कैसे स्वीकार कर सकता है।ए कैसी न्याय व्यवस्था है।कि अपराधी मस्त और निर्दोष त्रस्त हैं।

होना तो ए चाहिए कि जब कर्नल पुरोहित आदि दोषी नहीं थे तो दोषी कौन?कहीं दोषी वो लोग तो नहीं थे जो असली अपराधियों को बचाने के लिए मनगढ़ंत लोगों को अपराधी बना दिये।और असली अपराधी को देश से बाहर कर दिए। हमारे देश का नियम कहता है कि अपराधी का साथ देने वाला भी अपराधी ही होता है।यहॉं तो घनघोर अपराध हुआ है। आतंकवादियों को भगाया गया है।और हमारी सेना को हमारे संतों को आतंकवादी बनाने का कुत्सित प्रयास किया गया है।जिसने भी यह कुकृत्य किया है।उसको सजा कब मिलेगी।जब उन साजिश कर्ताओं को सजा नहीं दी जायेगी।तो न्याय व्यवस्था कटघरे में ही रहेगी। इसलिए अदालत वर्तमान सरकार को निर्देश दे कि मालेगांव समझौता एक्सप्रेस बम ब्लास्ट के अपराधियों साजिश कर्ताओं और उन्हें देश से बाहर भेजने वालों को ढूँढ़ कर न्याय के कटघरे में लाकर खड़ा करें।और मालेगांव समझौता एक्सप्रेस ब्लास्ट में मारे गये लोगों को न्याय देकर उन पुण्य आत्माओं को शांति प्रदान करे।और हम भारतवासियों को इस उहापोह की स्थिति से बाहर निकाले।

–पं.जमदग्निपुरी

व्यक्ति धन से बड़ा नही कर्म से बड़ा होता

व्यक्ति धन से बड़ा नही कर्म से बड़ा होता क्योंकि कर्म भगवान का और धन संसार का क्योंकि व्यक्ति का कर्म अच्छा है तो दुनिया साधन संपती उसके रक्षा करती है पीछे दौड़ती है क्योंकि कर्म तेरी अच्छी है तो किस्मत तेरी दासी है और नियत तेरी अच्छी है तो घर में मथुरा काशी मंदिर है क्योंकि आत्मा का मंदिर शरीर है इस मंदिर को शुद्ध पबित्र रखे भगवान बाहर नहीं नियत मे हृदय पबित्र स्थान भगवान का है तो रक्षा धन नहीं धर्म तो साधन रथ है कर्म चलाते कर्म ही धर्म है धर्म का अर्थ धारण करना तो गुण धारण करने से सुख एवं मुक्ति संभव है जैसे भोजन शरीर मे जाएगा तो भुख मिटेगा तो धर्म धारण करे तो सुख होगा और जब मनुष्य के आत्मा मे भगवान है तो अपने रिश्ते में भगवान देखे रिश्ते टुटेगा नहीं जीव मात्र की निःस्वार्थ सेवा भक्ति है तो तुलसी को कभी पौधा न समझे और गाय को कभी पशु न समझे और माता पिता को कभी मनुष्य न समझे क्योंकि ये तीनो साक्षात भगवान के रुप होते हैं। आज राम की पुजा तो आप करते हैं लेकिन लोग भाई भाई पर केश ज्यादा केश भाई पर मिलता है ग्रंथ पुराण में एक प्रसंग आया है भगवान राम के सामने प्रश्न है आपकी पुजा तो पुरा संसार देवी देवता करते है आप धर्म कि रक्षा मर्यादा का पालन करते हुए किये किये हैं जिसे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान कहलाए है लेकिन आप किसको पुजते है तो भगवान का प्रसंग था अपने भरत भाई को पुजा करते भगवान के लिए भाई से बड़ा कोई भगवान नही सत्संग घर समाज देश को जीना सीखाता है भक्ति माता–पिता की सेवा और समर्पण और जब घर परिवार में परस्पर प्रेम बढ़ता है तो उस घर के लोग विचार और विवेक से काम करते हैं और जो अच्छा काम करता है समाज देश के लिए राष्ट्र के लिए त्याग बलिदान करता है उसी का कीर्ति होती है लोग संसार में उसी गुणगान करते हैं तो कीर्ति उसी की होती है जो त्याग करता है उसी का लोग संसार में गुणगान करते हैं कीर्ति का अर्थ त्याग केवल अपना परिवार मकान अपना पेट वो आपका है परंतु कीर्ति धर्म त्याग बलिदान से होता है जो जन्मों जन्मों तक संसार से मिटता नहीं भले शरीर मिट लेकिन शहीद का त्याग है कि आप स्वतंत्र हो केवल शरीर का त्याग नहीं घर समाज में त्याग प्रेम से जीना ही जिंदगी के साथ भी जिंदगी के बाद भी।

अभी क्यों किये

सन २०१४ के बाद एक वाक्य बहुत अधिक प्रचलन में आया।वो है अभी क्यों?जब भी वर्तमान सरकार कोई जनहित व देशहित के काम करती है और चुनाव के आस पास करती है तो,विपक्ष सवाल करता है कि अभी क्यों किये।चुनाव बीतने के बाद करना चाहिए था।अब बताइए भारत में हर छठे महीने कोई न कोई कहीं न कहीं चुनाव होता है।तो क्या सरकार कोई काम न करे। सिर्फ चुनाव बीतने का इंतजार करे।तब तो न चुनाव खत्म होंगे।न सरकार कुछ कर पायेगी।तो देश का विकास नहीं हो पायेगा।और जब देश का विकास नहीं होगा तो,जनता का विकास कैसे होगा। आतंकी हमला होता है।और उसी के आस पास चुनाव रहता है। सरकार जब आतंकी हमले का विधिवत जवाब देती है तो,विपक्ष कहता है अभी क्यों किये। चुनाव बीतने तक रुके क्यों नहीं।इसी तरह भगवान श्रीराम जी के मंदिर का फैसला आने का हुआ तो विपक्ष बोला अभी क्यों आ रहा है।संसद भवन का उद्घाटन होने का हुआ फिर विपक्ष बोला अभी क्यों कर रहे हो। चुनाव बीतने दो।मंगल यान को जब दक्षिणी ध्रुव पर स्थापित किया जा रहा था,तब भी विपक्ष का सवाल यही था,अभी क्यों?

कितनी हास्यास्पद बात है।जब भी सरकार कुछ देशहित व जनहित के कार्य करने चलती है तो,विपक्ष यही सवाल करता है कि अभी क्यों? बिहार में चुनाव आयोग ने वोटरलिस्ट का परीक्षण शुरू किया।यह पता करने की कोशिश की कि वोटरलिस्ट में कितने नाम मृत व्यक्तियों के हैं और कितने नाम फर्जी जुड़े हैं।तो विपक्ष से नहीं रहा गया।वही घिसा पिटा राग अलापा,अभी क्यों? आप सब मानेंगे नहीं, लेकिन विपक्ष खुद कह रहा है कि बिहार में सत्तर लाख वोटर निरस्त किए गये। जिसमें आधे मर चुके हैं।आधे भारतीय नागरिक न होते हुए वोटर थे।या दो दो जगह वोटर थे। सोचिए कितना बड़ा घपला चल रहा है।अब उनके नाम हटाये गये तो विपक्ष कह रहा है अभी क्यों? बताइए तब किया कब जाय।विपक्ष कह रहा है इससे चुनाव प्रभावित हो जायेगा।परीक्षण चुनाव बीतने के बाद करना चाहिए।जब भी किसी घपले बाज नेता के यहॉ ईडी आईटी सीबीआई आईबी की रेड पड़ती है।उसकी चोरी उजागर होती है तो विपक्ष सवाल करता है अभी क्यों? क्यों भाई देश को लूटने के लिए और समय चाहिए।अभी नहीं तो तब कब,ये सवाल अब हम भारतीय विपक्ष से जानना चाहते हैं।

अभी हाल ही में विगत दिनों अमरनाथ यात्रा शुरू हुई।कोई अनहोनी न हो इसके लिए सरकार ने आपरेशन महादेव शुरू किया और चुन चुन कर आतंकवादियों को निपटाना शुरू किया। इत्तफाक से संसद सत्र भी शुरू हो गया।अब विपक्ष को जनहित के मुद्दे नहीं दिखे।दिखा सिर्फ आपरेशन महादेव। आपरेशन महादेव से आतंकी मारे जा रहे हैं। देशद्रोहियों का सफाया हो रहा है।पेट में दर्द यहॉ संसद में हमारे विपक्षी सांसदों को हो रहा है।वो जनहित देश हित के सवाल न पूॅछकर कर पूॅछ रहे हैं आपरेशन महादेव अभी क्यों?समझ में नहीं आ रहा है ये जनता द्वारा चुनकर आते हैं या आतंकवादियों द्वारा।जनता मारी जाती है तब तो ये कुछ नहीं बोलते। आतंकी मारे जाते हैं तो, बहुत बोलते हैं,रोते हैं।इतना रोते हैं उतना तो उसके घर वाले नहीं रोते होंगे।इसलिए जनता को यह लग रहा है कि ए हमारे नेता हैं, हमारे प्रतिनिधि हैं कि आतंकवादियों और देशद्रोहियों के।बार बार एक ही सवाल पूॅछते हैं। अभी क्यों?

अब बात आती है जब हर छठे महीने चुनाव आ जाता है। सरकार कुछ अच्छे जनहित व देशहित के काम करने चलती है तो विपक्ष अड़ंगेबाजी करता है।तो क्या सरकार काम न करे।करे तो कब करे।विपक्ष के हिसाब से तो सरकार को कुछ करना ही नहीं चाहिए।गजब का दुष्प्रचार करता है विपक्ष।ये सब काम जो हो रहा है चुनाव को देखते हुए कर रही है सरकार।अब बताइए चुनाव के नजदीक बाढ़ आ जाय और सरकार कुछ न करें।यह सोचकर कि चुनाव है।कोई भीषण आतंकी हमला हो जाय सरकार कुछ न करें यह सोचकर कि चुनाव है। कोई दुश्मन देश भारत पर हमला कर दे। सरकार कुछ न करे।यह सोचकर कि चुनाव है।तो देश कैसे चलेगा।जनता का दुख कौन दूर करेगा।तबतो बड़ी विकट परिस्थिति का निर्माण हो जायेगा । दुश्मन देश हम पर हावी होकर हमें गुलाम बना लेगा।तो क्या विपक्ष भारत को फिर से गुलाम बनाना चाह रहा है।जो हमेशा संसद से सड़क तक बेतुके सवाल करता रहता है।हम जब विपक्षियों की कार्यप्रणाली पर नजर दौड़ाते हैं तो, पाते हैं कि आज का विपक्ष हर वो कार्य कर रहा है। जिससे देश की मर्यादा का हनन साफ झलकता है। झलकती है तो देशद्रोही आतंकवादियों की झलक। क्योंकि ये सदैव भ्रष्टाचारियों देशद्रोहियों आतंकवादियों के ही बचाव में सब कुछ करते नजर आते हैं। क्योंकि की ऐसी घटनाएं इस समय पिछले कुछ वर्षों में घटी है।जो विपक्ष के विकृत चेहरे का दिखा रहा है।जैसे पुलवामा और उरी के बाद भारत सरकार ने जो सर्जिकल व एयर स्ट्राइक किया।व अभी पहलगाम की आतंकी घटना के बाद जो आपरेशन सिंदूर द्वारा पाक पड़ोसी की बैंड बजाई।उससे पाक को कम हमारे देश के विपक्षियों को अधिक पीड़ा हुई।ए मैं नहीं कह रहा।आप सब विपक्षियों के बयान उठाकर देख लें।ऐसा लगता ही नहीं कि ये भारत के नेता हैं।ऐसा लगता है जैसे ये पाकिस्तान के नेता हैं।ए हर विकासशील काम में रोड़ा अटकाते आ रहे हैं।जिससे देश विकास न कर सके। इसलिए ये जनहित का सवाल न पूॅछकर कर,पूॅछते हैं अभी क्यों? लेकिन वर्तमान सरकार भी गजब की है।वह कहती हैं अभी नहीं तो कब। इसलिए हर काम समय से होगा।आप अपना काम करते रहिये हम अपना करते रहेंगे।आप पूॅछते रहिए अभी क्यों किये।

विपक्ष का पूॅछना भी गलत नहीं है।अक्सर महत्वपूर्ण कार्य सरकार चुनाव के आस पास ही करती है।चाहे भ्रष्टाचार पर स्ट्राइक हो, चाहे राम मंदिर व संसद भवन का उद्घाटन हो,चाहे पाकिस्तान पर हमला हो।चाहे जनहित व देशहित का कोई महत्वपूर्ण कार्य हो। सरकार चुनाव के समय ही करती है।ऐसा क्यों?सवाल तो बनता है।मगर सरकार भी करे तो क्या करे।जब आये दिन चुनाव होते ही रहते हैं।तो सरकार हॉथ पर हॉथ धरे तो नहीं बैठ सकती।विपक्ष को सत्ता हासिल करना है। सरकार को भी तो सत्ता बचायें रखना है। यदि विपक्ष को यह तकलीफ है कि सरकार चुनाव देखकर काम कर रही है।तो, पुरजोर तरीके से एक देश एक चुनाव की मॉग करना चाहिए।सब झंझट ही समाप्त हो जाती।मगर विपक्ष एक देश एक चुनाव का विरोध कर यह बता रहा है कि अपना काम बनता भाड़ में जाये देश,भाड़ में जाए जनता।इससे विपक्ष की कुत्सित मानसिकता साफ साफ दिखाई दे रही है।ये हर उस गलत का समर्थन करते आ रहे हैं,जिससे देश की अपार क्षति हो रही है।सत्ता पाने के लिए ये इस कदर पिगलाये हुए हैं कि क्या कहने।जवाब नहीं है।ये संसद में फिलिस्तीन का पाकिस्तान का झंडा फहराने से भी बाज नहीं आ रहे।और सोच रहे हैं सत्ता की सीढ़ी यही है।विपक्ष यह नहीं सोच पा रहा कि मंदिर बनवाने से यदि सत्ता मिलती तो भाजपा इस बार २४० पर नहीं सिमटती।३००पार होती।और खुद अयोध्या नहीं हारती।भाजपा जीत रही है तो जनहित देशहित में काम करके।आई भी है तो अभी क्यों किये कह के नहीं।अभी क्यों नहीं किए यह कहके।भाजपा का सूत्र है अभी नहीं तो कभी नहीं।

काल करे सो आज कर आज करे सो अब।

पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब।।

विपक्ष को भी यही सूत्र अपनाना चाहिए। अपनाना क्या चाहिए अपना लेना चाहिए।लेकिन विपक्ष यह न करके पूॅछता है,अभी क्यों किये।

—पं.जमदग्निपुरी

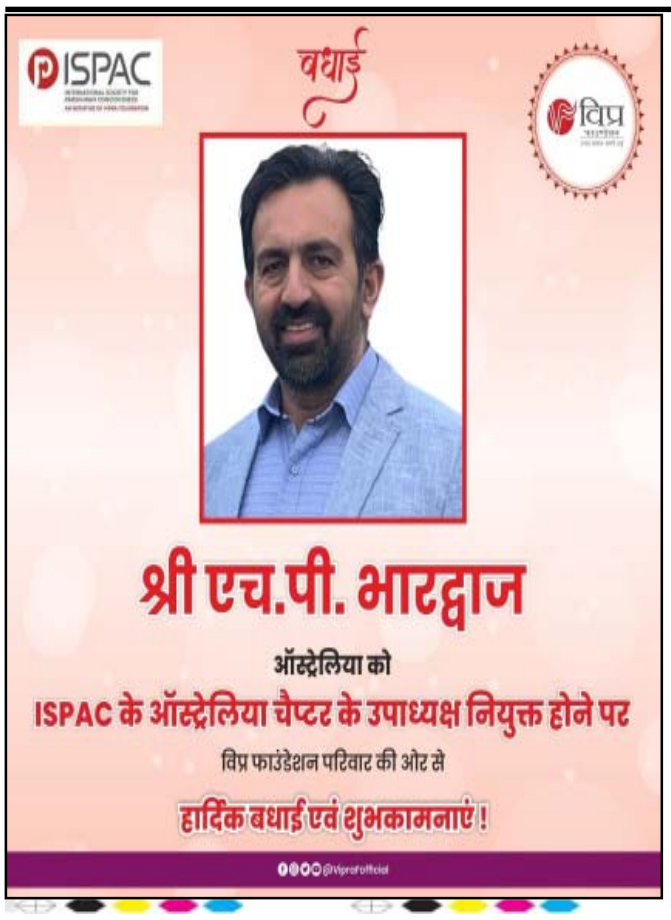

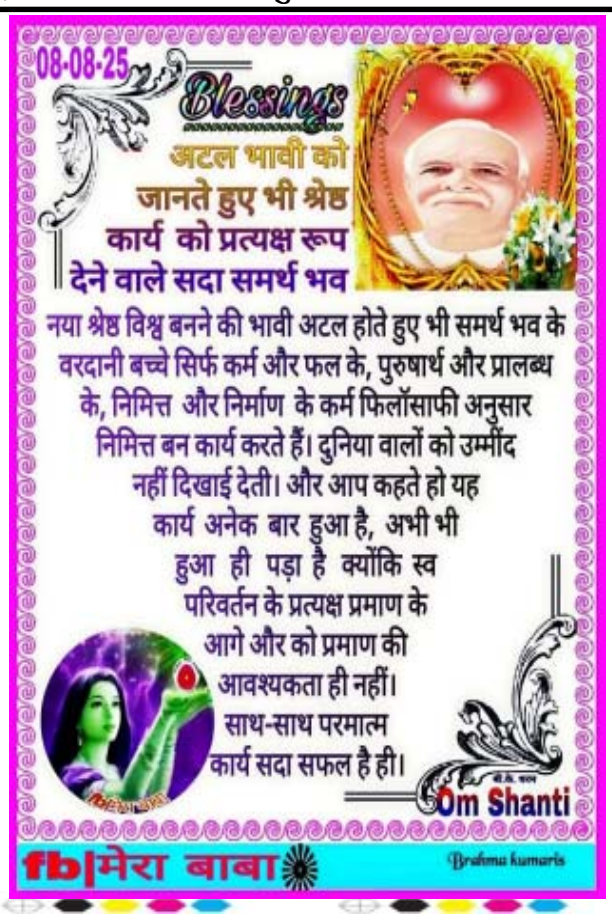

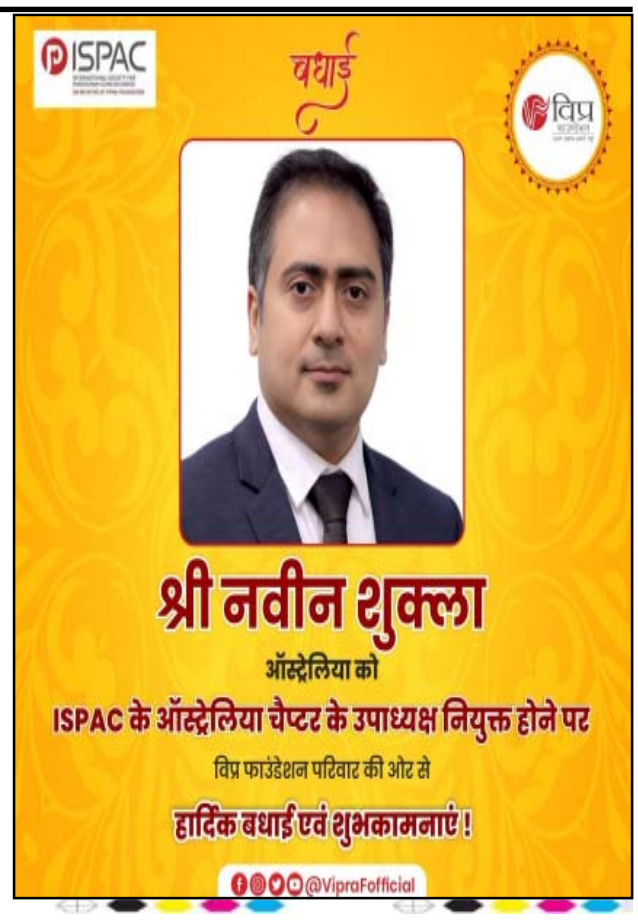

हिंदू धर्मग्रंथों का सार, जानिए किस ग्रंथ में क्या है ?

अधिकतर हिन्दुओं के पास अपने ही धर्मग्रंथ को पढ़ने का समय नहीं है। वेद, उपनिषद पढ़ना तो दूर, वे गीता तक को नहीं पढ़ते जबकि गीता को 1 घंटे में पढ़ा जा सकता है। हालांकि कई जगह वे भागवत पुराण सुनने या रामायण का अखंड पाठ करने के लिए समय निकाल लेते हैं या घर में सत्यनारायण की कथा करवा लेते हैं। लेकिन आपको यह जानकारी होना चाहिए कि पुराण, रामायण और महाभारत हिन्दुओं के धर्मग्रंथ नहीं हैं, धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं।

शास्त्रों को 2 भागों में बांटा गया है– श्रुति और स्मृति। श्रुति के अंतर्गत धर्मग्रंथ वेद आते हैं और स्मृति के अंतर्गत इतिहास और वेदों की व्याख्या की पुस्तकें पुराण, महाभारत, रामायण, स्मृतियां आदि आते हैं। हिन्दुओं के धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं। वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गीता है। आओ जानते हैं कि उक्त ग्रंथों में क्या है।

वेदों में क्या है ?

वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, इतिहास, संस्कार, रीति–रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है। वेद 4 हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गंधर्व वेद और अथर्ववेद का स्थापत्य वेद ये क्रमशः चारों वेदों के उपवेद बतलाए गए हैं।

ऋग्वेद : – ऋक अर्थात स्थिति और ज्ञान। इसमें भौगोलिक स्थिति और देवताओं के आवाहन के मंत्रों के साथ बहुत कुछ है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सौर चिकित्सा, मानस चिकित्सा और हवन द्वारा चिकित्सा आदि की भी जानकारी मिलती है।

यजुर्वेद : – यजु अर्थात गतिशील आकाश एवं कर्म। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियां और यज्ञों में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ के अलावा तत्वज्ञान का वर्णन है। तत्वज्ञान अर्थात रहस्यमयी ज्ञान। ब्रम्हांड, आत्मा, ईश्वर और पदार्थ का ज्ञान। इस वेद की 2 शाखाएं हैं– शुक्ल और कृष्ण।

सामवेद : – साम का अर्थ रूपांतरण और संगीत। सौम्यता और उपासना। इस वेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय रूप है। इसमें सविता, अग्नि और इन्द्र देवताओं के बारे में जिक्र मिलता है। इसी से शास्त्रीय संगीत और नृत्य का जिक्र भी मिलता है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है। इसमें संगीत के विज्ञान और मनोविज्ञान का वर्णन भी मिलता है।

अथर्ववेद : – थर्व का अर्थ है कंपन और अथर्व का अर्थ अकंपन। इस वेद में रहस्यमयी विद्याओं, जड़ी–बूटियों, चमत्कार और आयुर्वेद आदि का जिक्र है। इसमें भारतीय परंपरा और ज्योतिष का ज्ञान भी मिलता है।

उपनिषद क्या है ?

उपनिषद वेदों का सार है। सार अर्थात निचोड़ या संक्षिप्त। उपनिषद भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार हैं, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के स्रोत हैं। ईश्वर है या नहीं, आत्मा है या नहीं, ब्रह्मांड कैसा है आदि सभी गंभीर, तत्वज्ञान, योग, ध्यान, समाधि, मोक्ष आदि की बातें उपनिषद में मिलेंगी। उपनिषदों को प्रत्येक हिन्दू को पढ़ना चाहिए। इन्हें पढ़ने से ईश्वर, आत्मा, मोक्ष और जगत के बारे में सच्चा ज्ञान मिलता है।

वेदों के अंतिम भाग को 'वेदांत' कहते हैं। वेदांतों को ही उपनिषद कहते हैं। उपनिषद में तत्वज्ञान की चर्चा है। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 108 है, परंतु मुख्य 12 माने गए हैं, जैसे– 1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य, 7. तैत्तिरीय, 8. ऐतरेय, 9. छांदोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11. कौषीतकि और 12. श्वेताश्वतर।

षड्दर्शन क्या है ?

वेद से निकला षड्दर्शन : वेद और उपनिषद को पढ़कर ही 6 ऋषियों ने अपना दर्शन गढ़ा है। इसे भारत का षड्दर्शन कहते हैं। दरअसल, यह वेद के ज्ञान का श्रेणीकरण है। ये 6 दर्शन हैं– 1. न्याय, 2. वैशेषिक, 3. सांख्य, 4. योग, 5. मीमांसा और 6. वेदांत। वेदों के अनुसार सत्य या ईश्वर को किसी एक माध्यम से नहीं जाना जा सकता। इसीलिए वेदों ने कई मार्गों या माध्यमों की चर्चा की है।

गीता में क्या है ?

महाभारत के 18 अध्यायों में से 1 भीष्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता में भी कुल 18 अध्याय हैं। 10 अध्यायों की कुल श्लोक संख्या 700 है। वेदों के ज्ञान को नए तरीके से किसी ने व्यवस्थित किया है तो वे हैं भगवान श्रीकृष्ण। अतः वेदों का पॉकेट संस्करण है गीता, जो हिन्दुओं का सर्वमान्य एकमात्र ग्रंथ है। किसी के पास इतना समय ही नहीं है कि वह वेद या उपनिषद पढ़े। उनके लिए गीता ही सबसे उत्तम धर्मग्रंथ है। गीता को बार–बार पढ़ने के बाद ही वह समझ में आने लगती है।

गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्ग की चर्चा की गई है। उसमें यम–नियम और धर्म–कर्म के बारे में भी बताया गया है। गीता ही कहती है कि ब्रह्म (ईश्वर) एक ही है। गीता को बार–बार पढ़ेंगे तो आपके समक्ष इसके ज्ञान का रहस्य खुलता जाएगा। गीता के प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रंथ लिखा जा सकता है।

गीता में सृष्टि उत्पत्ति, जीव विकास क्रम, हिन्दू संदेशवाहक क्रम, मानव उत्पत्ति, योग, धर्म–कर्म, ईश्वर, भगवान, देवी–देवता, उपासना, प्रार्थना, यम–नियम, राजनीति, युद्ध, मोक्ष, अंतरिक्ष, आकाश, धरती, संस्कार, वंश, कुल, नीति, अर्थ, पूर्व जन्म, जीवन प्रबंधन, राष्ट्र निर्माण, आत्मा, कर्मसिद्धांत, त्रिगुण की संकल्पना, सभी प्राणियों में मैत्रीभाव आदि सभी की जानकारी है।

श्रीमद्भगवद्गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी है। इसके प्रत्येक श्लोक में ज्ञानरूपी प्रकाश है जिसके प्रस्फुटित होते ही अज्ञान का अंधकार नष्ट हो जाता है। ज्ञान–भक्ति–कर्म योग मार्गों की विस्तृत व्याख्या की गई है। इन मार्गों पर चलने से व्यक्ति निश्चित ही परम पद का अधिकारी बन जाता है। गीता को अर्जुन के अलावा और संजय ने सुना और उन्होंने धृतराष्ट्र को सुनाया। गीता में श्रीकृष्ण ने 574, अर्जुन ने 85, संजय ने 40 और धृतराष्ट्र ने 1 श्लोक कहा है। उपरोक्त ग्रंथों के ज्ञान का सार बिंदुवार :

1. ईश्वर के बारे में

ब्रह्म (परमात्मा) एक ही है जिसे कुछ लोग सगुण (साकार) तो कुछ लोग निर्गुण (निराकार) कहते हैं। हालांकि वह अजन्मा, अप्रकट है। उसका न कोई पिता है और न ही कोई उसका पुत्र है। वह किसी के भाग्य या कर्म को नियंत्रित नहीं करता। न कि वह किसी को दंड या पुरस्कार देता है। उसका न तो कोई प्रारंभ है और न ही अंत। वह अनादि और अनंत है। उसकी उपस्थिति से ही संपूर्ण ब्रह्मांड चलायमान है। सभी कुछ उसी से उत्पन्न होकर अंत में उसी में लीन हो जाता है। ब्रह्मलीन।

2. ब्रह्मांड के बारे में

यह दिखाई देने वाला जगत फैलता जा रहा है और दूसरी ओर से यह सिकुड़ता भी जा रहा है। लाखों सूर्य, तारे और धरतीयों का जन्म है, तो उसका अंत भी। जो जन्मा है वह मरेगा भी। सभी कुछ उसी ब्रह्म से जन्मे और उसी में लीन हो जाने वाले हैं। यह ब्रह्मांड परिवर्तनशील है। इस जगत का संचालन उसी की शक्ति से स्वतः ही होता है, जैसे कि सूर्य के आकर्षण से ही धरती अपनी धूरी पर टिकी हुई होकर चलायमान है। उसी तरह लाखों सूर्य और तारे एक महासूर्य के आकर्षण से टिके होकर संचालित हो रहे हैं। उसी तरह लाखों महासूर्य उस एक ब्रह्मा की शक्ति से ही जगत में विद्यमान हैं।

3. आत्मा के बारे में

आत्मा का स्वरूप ब्रह्म (परमात्मा) के समान है। जैसे सूर्य और दीपक में जो फर्क है उसी तरह आत्मा और परमात्मा में फर्क है। आत्मा के शरीर में होने के कारण ही यह शरीर संचालित हो रहा है। ठीक उसी तरह जिस तरह कि संपूर्ण धरती, सूर्य, ग्रह–नक्षत्र और तारे भी उस एक परमपिता की उपस्थिति से ही संचालित हो रहे हैं। आत्मा का न जन्म होता है और न ही उसकी कोई मृत्यु होती है। आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है। यह आत्मा अजर और अमर है। आत्मा को प्रकृति द्वारा 3 शरीर मिलते हैं– एक, वह जो स्थूल आंखों से दिखाई देता है। दूसरा, वह जिसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं, जो कि ध्यानी को ही दिखाई देता है और तीसरा, वह शरीर जिसके कारण शरीर कहते हैं, उसे देखना अत्यंत ही मुश्किल है। बस उसे वही आत्मा महसूस करती है, जो कि उसमें रहती है। आप और हम दोनों ही आत्मा हैं। हमारे नाम और शरीर अलग–अलग हैं लेकिन भीतरी स्वरूप एक ही हैं।

4. स्वर्ग और नरक के बारे में

वेदों के अनुसार पुराणों के स्वर्ग या नर्क को गतियों से समझा जा सकता है। स्वर्ग और नर्क 2 गतियां हैं। आत्मा जब देह छोड़ती है तो मूलतः 2 तरह की गतियां होती हैं– 1. अगति और 2. गति।

1. अगति : – अगति में व्यक्ति को मोक्ष नहीं मिलता है उसे फिर से जन्म लेना पड़ता है।

2. गति : – गति में जीव को किसी लोक में जाना पड़ता है या वह अपने कर्मों से मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

अगति के 4 प्रकार हैं– 1. क्षिणोदर्क, 2. भूमोदर्क, 3. अगति और 4. दुर्गति।

क्षिणोदर्क : – क्षिणोदर्क अगति में जीव पुनः पुण्यात्मा के रूप में मृत्युलोक में आता है और संतों–सा जीवन जीता है।

भूमोदर्क : – भूमोदर्क में वह सुखी और ऐश्वर्यशाली जीवन पाता है।

अगति : – अगति में नीच या पशु जीवन में चला जाता है।

दुर्गति : दुर्गति में वह कीट–कीड़ों जैसा जीवन पाता है।

गति के भी 4 प्रकार– गति के अंतर्गत 4 लोक दिए गए हैं– 1. ब्रह्मलोक, 2. देवलोक, 3. पितृलोक और 4. नर्कलोक। जीव अपने कर्मों के अनुसार उक्त लोकों में जाता है।

तीन मार्गों से यात्रा

जब भी कोई मनुष्य मरता है या आत्मा शरीर को त्यागकर यात्रा प्रारंभ करती है तो इस दौरान उसे 3 प्रकार के मार्ग मिलते हैं। ऐसा कहते हैं कि उस आत्मा को किस मार्ग पर चलाया जाएगा और यह केवल उसके कर्मों पर निर्भर करता है। ये 3 मार्ग हैं– अर्चि मार्ग, धूम मार्ग और उत्पत्ति–विनाश मार्ग। अर्चि मार्ग ब्रह्मलोक और देवलोक की यात्रा के लिए होता है, वहीं धूममार्ग पितृलोक की यात्रा पर ले जाता है और उत्पत्ति–विनाश मार्ग नर्क की यात्रा के लिए है।

5. धर्म और मोक्ष के बारे में

धर्मग्रंथों के अनुसार धर्म का अर्थ है यम और नियम को समझकर उसका पालन करना। नियम ही धर्म है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से मोक्ष ही अंतिम लक्ष्य होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार व्यक्ति को मोक्ष के बारे में विचार करना चाहिए। मोक्ष क्या है? स्थितप्रज्ञ आत्मा को मोक्ष मिलता है। मोक्ष का भावार्थ यह कि आत्मा शरीर नहीं है, इस सत्य को पूर्णतः अनुभव करके ही अशरीरी होकर स्वयं के अस्तित्व को पुख्ता करना ही मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है।

6. व्रत और त्योहार के बारे में

हिन्दू धर्म के सभी व्रत, त्योहार या तीर्थ सिर्फ मोक्ष की प्राप्त हेतु ही निर्मित हुए हैं। मोक्ष तब मिलेगा जब व्यक्ति स्वस्थ रहकर प्रसन्नचित्त और खुशहाल जीवन जीएगा। व्रत से शरीर और मन स्वस्थ होता है। त्योहार से मन प्रसन्न होता है और तीर्थ से मन और मस्तिष्क में वैराग्य और अध्यात्म का जन्म होता है।

मौसम और ग्रह–नक्षत्रों की गतियों को ध्यान में रखकर बनाए गए व्रत और त्योहारों का महत्व अधिक है। व्रतों में चतुर्थी, एकादशी, प्रदोष, अमावस्या, पूर्णिमा, श्रावण मास और कार्तिक मास के दिन व्रत रखना श्रेष्ठ है। यदि उपरोक्त सभी नहीं रख सकते हैं तो श्रावण के पूरे महीने व्रत रखें। त्योहारों में मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, नवरात्रि, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी और हनुमान जन्मोत्सव ही मनाएं। पर्व में श्राद्ध और कुंभ का पर्व जरूर मनाएं।

व्रत करने से काया निरोगी और जीवन में शांति मिलती है। सूर्य की 12 और 12 चन्द्र की संक्रांतियां होती हैं। सूर्य संक्रांतियों में उत्सव का अधिक महत्व है, तो चन्द्र संक्रांति में व्रतों का अधिक महत्व है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन। इसमें से श्रावण मास को व्रतों में सबसे श्रेष्ठ मास माना गया है। इसके अलावा प्रत्येक माह की एकादशी, चतुर्दशी, चतुर्थी, पूर्णिमा, अमावस्या और अधिकमास में व्रतों का अलग–अलग महत्व है। सौरमास और चान्द्रमास के बीच बढ़े हुए दिनों को मलमास या अधिकमास कहते हैं। साधुजन चातुर्मास अर्थात 4 महीने श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक माह में व्रत रखते हैं।

उत्सव, पर्व और त्योहार सभी का अलग–अलग अर्थ और महत्व है। प्रत्येक ऋतु में एक उत्सव है। उन त्योहार, पर्व या उत्सव को मनाने का महत्व अधिक है जिनकी उत्पत्ति स्थानीय परंपरा या संस्कृति से न होकर जिनका उल्लेख वैदिक धर्मग्रंथ, धर्मसूत्र, स्मृति,

पुराण और आचार संहिता में मिलता है। चन्द्र और सूर्य की संक्रांतियों के अनुसार कुछ त्योहार मनाए जाते हैं। 12 सूर्य संक्रांतियां होती हैं जिसमें 4 प्रमुख हैं– मकर, मेष, तुला और कर्क। इन 4 में मकर संक्रांति महत्वपूर्ण है। सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ, संक्रांति और कुंभ। पर्वों में रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गुरुपूर्णिमा, वसंत पंचमी, हनुमान जयंती, नवरात्रि, शिवरात्रि, होली, ओणम, दीपावली, गणेश चतुर्थी और रक्षाबंधन प्रमुख हैं। हालांकि सभी में मकर संक्रांति और कुंभ को सर्वोच्च माना गया है।

7. तीर्थ के बारे में

तीर्थ और तीर्थयात्रा का बहुत पुण्य है। जो मनमाने तीर्थ और तीर्थ पर जाने के समय हैं, उनकी यात्रा का सनातन धर्म से कोई संबंध नहीं। तीर्थों में 4 धाम ज्योतिर्लिंग, अमरनाथ, शक्तिपीठ और सप्तपुरी की यात्रा का ही महत्व है। अयोध्या, मथुरा, काशी और प्रयाग को तीर्थों का प्रमुख केंद्र माना जाता है जबकि कैलाश मानसरोवर को सर्वोच्च तीर्थ माना गया है। बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम् और जगन्नाथपुरी ये 4 धाम हैं। सोमनाथ, द्वारका, महाकालेश्वर, श्रीशैल, भीमाशंकर, घ्कारेश्वर, केदारनाथ, विश्वनाथ, त्र्यंबकेश्वर, रामेश्वरम्, घृष्णेश्वर और बैद्यनाथ ये द्वादश ज्योतिर्लिंग हैं। काशी, मथुरा, अयोध्या, द्वारका, माया, कांची और अवंति उज्जैन ये सप्तपुरियां हैं। उपरोक्त कहे गए तीर्थ की यात्रा ही धर्मसम्मत है।

8. संस्कार के बारे में

संस्कारों के प्रमुख प्रकार 16 बताए गए हैं जिनका पालन करना हर हिन्दू का कर्तव्य है। इन संस्कारों के नाम है– गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णवेधन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशांत, सम्वर्तन, विवाह और अंत्येष्टि। प्रत्येक हिन्दू को उक्त संस्कार को अच्छे से नियमपूर्वक करना चाहिए। यह मनुष्य के सभ्य और हिन्दू होने की निशानी है। उक्त संस्कारों को वैदिक नियमों के द्वारा ही संपन्न किया जाना चाहिए।

9. पाठ करने के बारे में

वेदों, उपनिषद या गीता का पाठ करना या सुनना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है। उपनिषद और गीता का स्वयं अध्ययन करना और उसकी बातों की किसी जिज्ञासु के समक्ष चर्चा करना पुण्य का कार्य है। लेकिन किसी बहसकर्ता या भ्रमित व्यक्ति के समक्ष वेद वचनों को कहना निषेध माना जाता है। प्रतिदिन धर्मग्रंथों का कुछ पाठ करने से देव शक्तियों की कृपा मिलती है। हिन्दू धर्म में वेद, उपनिषद और गीता के पाठ करने की परंपरा प्राचीनकाल से रही है। वक्त बदला तो लोगों ने पुराणों में उल्लेखित कथा की परंपरा शुरू कर दी, जबकि वेदपाठ और गीता पाठ का अधिक महत्व है।

10. धर्म, कर्म और सेवा के बारे में

धर्म–कर्म और सेवा का अर्थ यह कि हम ऐसा कार्य करें जिससे हमारे मन और मस्तिष्क को शांति मिले और हम मोक्ष का द्वार खोल पाएं। साथ ही जिससे हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय हित भी साधे जाते हों अर्थात ऐसा कार्य जिससे परिवार, समाज, राष्ट्र और स्वयं को लाभ मिले। धर्म–कर्म को कई तरीके से साधा जा सकता है, जैसे– 1. व्रत, 2. सेवा, 3. दान, 4. यज्ञ, 5. प्रायश्चित, दीक्षा देना और मंदिर जाना आदि।

सेवा का मतलब यह कि सर्वप्रथम माता–पिता, फिर बहन–बेटी, फिर भाई–बंधु की किसी भी प्रकार से सहायता करना ही धार्मिक सेवा है। इसके बाद अपंग, महिला, विद्यार्थी, संन्यासी, चिकित्सक और धर्म के रक्षकों की सेवा–सहायता करना पुण्य का कार्य माना गया है। इसके अलावा सभी प्राणियों, पक्षियों, गाय, कुत्ते, कौओं, चींटी आति को अन्न–जल देना– ये सभी यज्ञ कर्म में आते हैं।

11. दान के बारे में

दान से इन्द्रिय भोगों के प्रति आसक्ति छूटती है। मन की ग्रथियां खुलती हैं जिससे मृत्युकाल में लाभ मिलता है। देव आराधना का दान सबसे सरल और उत्तम उपाय है। वेदों में 3 प्रकार के दाता कहे गए हैं– 1. उक्तम, 2. मध्यम और 3. निकृष्टतम। धर्म की उन्नति, रूप, सत्य विद्या के लिए जो देता है, वह उत्तम। कीर्ति या स्वार्थ के लिए जो देता है वह मध्यम और जो वेश्ध्यागमनादि, भांड, भाटे, पंडे को देता वह निकृष्ट माना गया है। पुराणों में अन्नदान, वस्त्रदान, विद्यादान, अभयदान और धनदान को ही श्रेष्ठ माना गया है, यही पुण्ध्य भी है।

12. यज्ञ के बारे में

यज्ञ के प्रमुख 5 प्रकार हैं– ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ। यज्ञ पालन से ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण, धर्म ऋण, प्रकृति ऋण और मातृ ऋण समाप्त होता है। नित्य संध्यावंदन, स्वाध्याय तथा वेदपाठ करने से ब्रह्म यज्ञ संपन्न होता है। देवयज्ञ सत्संग तथा अग्निहोत्र कर्म से संपन्न होता है। अग्नि जलाकर होम करना अग्निहोत्र यज्ञ है। पितृयज्ञ को श्राद्धकर्म भी कहा गया है। यह यज्ञ पिंडदान, तर्पण और संतानोत्पत्ति से संपन्न होता है। वैश्वदेव यज्ञ को भूत यज्ञ भी कहते हैं। सभी प्राणियों तथा वृक्षों के प्रति करुणा और कर्तव्य समझना व उन्हें अन्न–जल देना ही भूत यज्ञ कहलाता है। अतिथि यज्ञ से अर्थ मेहमानों की सेवा करना। अपंग, महिला, विद्यार्थी, संन्यासी, चिकित्सक और धर्म के रक्षकों की सेवा–सहायता करना ही अतिथि यज्ञ है। इसके अलावा अग्निहोत्र, अश्वमेध, वाजपेय, सोमयज्ञ, राजसूय और अग्निचयन का वर्णण यजुर्वेद में मिलता है।

13. मंदिर जाने के बारे में

प्रति गुरुवार को मंदिर जाना चाहिए। घर में मंदिर नहीं होना चाहिए। मंदिर में जाकर परिक्रमा करना चाहिए। भारत में मंदिरों, तीर्थों और यज्ञादि की परिक्रमा का प्रचलन प्राचीनकाल से ही रहा है। मंदिर की 7 बार (सप्तपदी) परिक्रमा करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह 7 परिक्रमा विवाह के समय अग्नि के समक्ष भी की जाती है। इसी प्रदक्षिणा को इस्लाम धर्म ने परंपरा से अपनाया जिसे तवाफ कहते हैं। प्रदक्षिणा षोडशोपचार पूजा का एक अंग है। प्रदक्षिणा की प्रथा अतिप्राचीन है। हिन्दू सहित जैन, बौद्ध और सिख धर्म में भी परिक्रमा का महत्व है। इस्लाम में मक्का स्थित काबा की 7 परिक्रमा का प्रचलन है। पूजा–पाठ, तीर्थ परिक्रमा, यज्ञादि पवित्र कर्म के दौरान बिना सिले सफेद या पीत वस्त्र पहनने की परंपरा भी प्राचीनकाल से हिन्दुओं में प्रचलित रही है। मंदिर जाने या संध्यावंदन के पूर्व आचमन या शुद्धि करना जरूरी है। इसे इस्लाम में वुजू कहा जाता है।

14. संध्यावंदन के बारे में

संध्यावंदन को संध्योपासना भी कहते हैं। मंदिर में जाकर संधिकाल में ही संध्यावंदन की जाती है। वैसे संधि 8 वक्त की मानी गई है। उसमें भी 5 महत्वपूर्ण हैं। 5 में से भी सूर्य उदय और अस्त अर्थात 2 वक्त की संधि महत्वपूर्ण है। इस समय मंदिर या एकांत में शौच, आचमन, प्राणायामादि कर गायत्री छंद से निराकार ईश्वर की प्रार्थना की जाती है। संध्योपासना के 4 प्रकार हैं– 1. प्रार्थना, 2. ध्यान, 3. कीर्तन और 4. पूजा–आरती। व्यक्ति की जिसमें जैसी श्रद्धा है, वह वैसा करता है।

15. धर्म की सेवा के बारे में

धर्म की प्रशंसा करना और धर्म के बारे में सही जानकारी को लोगों तक पहुंचाना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य होता है। धर्म प्रचार में वेद, उपनिषद और गीता के ज्ञान का प्रचार करना ही उत्तम माना गया है। धर्म प्रचारकों के कुछ प्रकार हैं। हिन्दू धर्म को पढ़ना और समझना जरूरी है। हिन्दू धर्म को समझकर ही उसका प्रचार और प्रसार करना जरूरी है। धर्म का सही ज्ञान होगा, तभी उस ज्ञान को दूसरे को बताना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को धर्म प्रचारक होना जरूरी है। इसके लिए भगवा वस्त्र धारण करने या संन्यासी होने की जरूरत नहीं। स्वयं के धर्म की तारीफ करना और बुराइयों को नहीं सुनना ही धर्म की सच्ची सेवा है।

16. मंत्र के बारे में

वेदों में बहुत सारे मंत्रों का उल्लेख मिलता है, लेकिन जपने के लिए सिर्फ प्रणव और गायत्री मंत्र ही कहा गया है, बाकी मंत्र किसी विशेष अनुष्ठान और धार्मिक कार्यों के लिए है। वेदों में गायत्री नाम से छंद है जिसमें हजारों मंत्र हैं किंतु प्रथम मंत्र को ही गायत्री मंत्र माना जाता है। उक्त मंत्र के अलावा किसी अन्य मंत्र का जाप करते रहने से समय और ऊर्जा की बर्बादी है। गायत्री मंत्र की महिमा सर्वविदित है। दूसरा मंत्र है महामृत्युंजय मंत्र, लेकिन उक्त मंत्र के जप और नियम कठिन है इसे किसी जानकार से पूछकर ही जपना चाहिए।

17. प्रायश्चित के बारे में

प्राचीनकाल से ही हिन्दुओं में मंदिर में जाकर अपने पापों के लिए प्रायश्चित करने की परंपरा रही है। प्रायश्धचित करने के महत्व को स्मृति और पुराणों में विस्तार से समझाया गया है। गुरु और शिष्य परंपरा में गुरु अपने शिष्य को प्रायश्चित करने के अलग–अलग तरीके बताते हैं। दुष्कर्म के लिए प्रायश्चित करना तपस्या का एक दूसरा रूप है। यह मंदिर में देवता के समक्ष 108 बार साष्टांग प्रणाम, मंदिर के इर्द–गिर्द चलते हुए साष्टांग प्रणाम और कावडी अर्थात वह तपस्या, जो भगवान मुरुगन को अर्पित की जाती है, जैसे कृत्यों के माध्यम से की जाती है। मूलतः अपने पापों की क्षमा भगवान शिव और वरुणदेव से मांगी जाती है, क्योंकि क्षमा का अधिकार उनको ही है। जैन धर्म में 'क्षमा पर्व' प्रायश्चित करने का दिन है। दोनों ही धर्मों के इस नियम या परंपरा को ईसाई और मुस्लिम धर्म में भी शामिल किया गया है। ईसाई धर्म में इसे 'कंफेसस' और इस्लाम में 'कफ्फारा' कहा जाता है।

18. दीक्षा देने के बारे में

दीक्षा देने का प्रचलन वैदिक ऋषियों ने प्रारंभ किया था। प्राचीनकाल में पहले शिष्य और ब्राह्मण बनाने के लिए दीक्षा दी जाती थी। माता–पिता अपने बच्चों को जब शिक्षा के लिए भेजते थे तब भी दीक्षा दी जाती थी। हिन्दू धर्मानुसार दिशाहीन जीवन को दिशा देना ही दीक्षा है। दीक्षा एक शपथ, एक अनुबंध और एक संकल्प है। दीक्षा के बाद व्यक्ति द्विज बन जाता है। द्विज का अर्थ दूसरा जन्म। दूसरा व्यक्तित्व। सिख धर्म में इसे अमृत संचार कहते हैं। यह दीक्षा देने की परंपरा जैन धर्म में भी प्राचीनकाल से रही है, हालांकि दूसरे धर्मों में दीक्षा को अपने धर्म में धर्मांतरित करने के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। हिन्दू धर्म से इस परंपरा को ईसाई धर्म ने अपनाया जिसे वे बपस्तिमा कहते हैं। अलग–अलग धर्मों में दीक्षा देने के भिन्न–भिन्न तरीके हैं। यहूदी धर्म में खतना करके दीक्षा दी जाती है।

तुंगारेश्वर महादेव मंदिर परिसर में भजन संध्या एवं भंडारा का कार्यक्रम आयोजित किया गया

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी नालासोपारा पूर्व के दूबे इस्टेट परिवार एवं दुबे इस्टेट परिसर के सभी दुकानदारों द्वारा अमित ओमप्रकाश दुबे के नेतृत्व में उत्तर भारतीय पंचांग के अनुसार श्रावण मास के अंतिम रविवार अर्थात 3 अगस्त की सायंकाल से सोमवार 4 अगस्त की सुबह तक तुंगारेश्वर महादेव मंदिर परिसर में भजन संध्या एवं भंडारा का

कार्यक्रम आयोजित किया गया। सायं ठीक 6 बजे से रामधुन अर्थात महामंत्र (हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे) का गायन संपूर्ण साज बाज के साथ शुरु हुआ जो कि रात 9 बजे तक अखंडित चलता रहा स इसके पश्चात भजन गायन का कार्यक्रम आरम्भ हुआ स देर रात और सुबह होते होते मंदिर परिसर में हजारों भक्तों की भीड़ एकत्रित हुई स कार्यक्रम में देश की विभिन्न भाषाओं में भजन गायन चलता रहा जो कि सुबह 8 बजे तक चला स मुंबई तथा आसपास का परिसर एवं देशभर के म्यूजिक इंडस्ट्री के करीब 50/100/125/150/200 से ज्यादा कलाकारों ने स्वेच्छा से इस कार्यक्रम में सहभाग लेकर भगवान भोलेनाथ के चरणों में अपनी सेवा अर्पित की। कार्यक्रम में आद्या शंकराचार्य जगद्गुरु त्रिकाल भवन्ता सरस्वती जी माता और सत् समाज सदमार्गी अखाड़ा के श्री सुबोधानंद जी महाराज, राजपूताना परिवार के संस्थापक ददन सिंहजी आदि मान्यवर एवं सुरेश आनंद ओझा, शिवेश मिश्रा, संजय तिवारी सफल, मुकेश त्रिपाठी, दीपक सुहाना, अंकिता दुबे, रागिनी प्रजापति, प्रकाश वैश्य, रामानुज पाठक, सुशील कनोजिया आदि सुप्रसिद्ध कलाकार उपस्थित हुए स अमित ओमप्रकाश दुबे के साथ सभी मान्यवरों ने, दुबे इस्टेट के सभी दुकानदारों ने तथा म्यूजिक इंडस्ट्री के सभी कलाकारों ने

सपरिवार भगवान तुंगारेश्वर महादेव जी का जलाभिषेक किया. इसके पश्चात अमित दुबे ने सभी मान्यवरोंका, भक्तों एवं कलाकारों का धन्यवाद ज्ञापन एवं यथोचित सम्मान किया।

"बस एक ही नारा है: मुलुंड को बचाना है, अदानी को सबक सिखाना है, जन जागरूकता फैलाना है!"

मुंबई। धारावी पुनर्वसन परियोजना के अंतर्गत लगभग 5 लाख लोगों को मुलुंड में बसाने की योजना का महाविकास आघाडी ने जोरदार विरोध किया है। इस नियोजित पुनर्वसन के कारण पर्यावरण को होने वाली अपूरणीय क्षति और मुलुंड के बुनियादी ढांचे पर संभावित भीषण दबाव को लेकर महाविकास आघाडी के नेतृत्व में एक दिवसीय भूख हड़ताल का आयोजन किया गया।

यह आंदोलन श्री राकेश शंकर शेट्टी (प्रवक्ता, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति) के नेतृत्व में मुलुंड (पूर्व) रेलवे स्टेशन के निकट आयोजित किया गया।

इस आंदोलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार), शिवसेना (उद्धव बाळासाहेब ठाकरे) और समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में भाग लिया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से

सांसद वर्षा एकनाथ गायकवाड (उत्तर मध्य मुंबई), अध्यक्ष दृ मुंबई कांग्रेस

डॉ. ज्योति गायकवाड (विधायक दृ धारावी विधानसभा)

रमेश कोरगावकर (पूर्व विधायक एवं भांडुप विभाग प्रमुखः शिवसेना उबाठा)

राजोल संजय पाटील (युवा सेना समन्वयक)

पुरुषोत्तम दलवी (मुलुंड समन्वयक)

अमित पाटील (राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी नेता)

रमा शंकर तिवारी (महासचिवः समाजवादी पार्टी)

निसार खान (जिलाध्यक्ष दृ सपा)

उत्तम गीते (कार्याध्यक्ष दृ ई. मु. जिला कांग्रेस)

डॉ. बाबूलाल सिंह, डॉ. आर. आर. सिंह, राजेश इंगले, भरत सोनी, मधुकर म्हात्रे, कैलास पाटील, साहब दयाल सिंह, डॉ. सचिन सिंह, बीरेंद्र चतुर्वेदी, मालती पाटील, एड. शरीफ खान, सुनील जैन सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

श्री राकेश शंकर शेट्टी के साथ भगवान किशोर तिवारी एवं अब्दुल जब्बार 12 घंटे के उपवास पर बैठे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मुलुंड के दो लाख परिवारों के लिए आज भी पर्याप्त मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं, और ऐसे में तीन लाख बाहरी लोगों को बसाने की योजना मुलुंडवासियों पर अन्याय है।

श्री शेट्टी ने भाजपा नेताओं द्वारा चुनाव पूर्व किए गए वादों पर तंज कसते हुए सवाल उठाया दृ "क्या हुआ तेरा वादा?" और कहा कि "भाजपा नेता केवल झूठे वादे करते हैं और मुलुंड की सारी जमीनें अदानी को सौंप दी गई हैं।"

रात्रि 9:30 बजे मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद श्रीमती वर्षा गायकवाड ने स्वयं अनशन स्थल पर आकर श्री राकेश शेट्टी को जूस पिलाकर अनशन समाप्त करवाया। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से मांग की कि धारावीवासियों को वहीं पुनर्वसित किया जाए, और मुलुंड में रहने वाले झोपड़ाधारकों को यहीं स्थायी पुनर्वसन दिया जाए।

कार्यक्रम की सफलता में

संजय घरत, श्रीकृष्णा कानेकर, अरविंद यादव, राजन उठवाल, विट्ठल सातपुते, राकेश राघवन, आदित्य गीते, मोहनलाल राज, सुनील पाटील, राजेश मिश्रा, दिलीप गुप्ता, श्रीकांत साळुंके और अन्य कार्यकर्ताओं ने दिन–रात मेहनत की।

(राकेश शंकर शेट्टी)

प्रवक्ता, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति

गेसु संवाद की 100 वीं कड़ी उज्जैन में संपन्न

गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज (जी.ई.सी.यू.) उज्जैन के भूतपूर्व छात्र लायन एस. के. पटेल द्वारा "गेसू संवाद" नामक कार्यक्रम की१०० वीं कड़ी का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में किया गया। यह "संवाद" कार्यक्रम जी. ई. सी. यू. के उन पूर्व छात्रों का एक ऑनलाइन साक्षात्कार है जिन्होंने पेशेवर उत्कृष्टता हासिल की है और भारत या विदेश में इंजीनियरिंग, फार्मा, रिफाइनरी, आई. टी., ए. आई. आदि जैसे व्यवसायों में अपने पेशे में महान ऊंचाइयां हासिल की हैं। साथ ही पूर्व छात्र जिन्होंने भारत में और विदेशों में सशस्त्र बलों,आई. पी.एस., आई.ए.एस., वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में उच्च पद प्राप्त किए उनसे भी साक्षात्कार किया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरिंगके को एक व्यवसायी या पेशेवर के रूप में जीवन में आने वाली चुनौतियों और उनका सामना करने और उन्हें कैसे हल किया जाए इस बारे में मार्गदर्शन करना है। और ये भूतपूर्व छात्र जो आज बड़े बड़े सफल उद्योग चला रहे हैं तथा विविध क्षेत्रों में अति उच्चतम पदों पर कार्यरत हैं उनकी सफलता यात्रा के निचोड़को इंजीनियरिंग छात्र अपने भविष्य निर्माण की एक मार्ग दर्शिका के रूप में ईस्तेमाल कर सकते हैं।

वक्ता भारत, अमेरिका, चीन, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अफ्रीका, रूस आदि कई देशों में कार्यरत कॉलेज के भूतपूर्व छात्र हैं। छह साल पहले इस कार्यक्रम के उद्घाटन की प्रथम कड़ी में प्रथम वक्ता के रूप में कॉलेज के पूर्व छात्र लायन एस. के.पटेल को मुंबई के एक सफल व्यवसायी के रूप में साक्षात्कार के लिए पहले आमंत्रित किया गया था।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी ख़बर सच्ची